प्रकरण - ३
श्री ब्रह्मानंद स्वामी
का जीवन दर्शन
data:image/png;base64,iVBORw0KGgoAAAANSUhEUgAAAuAAABdCAYAAABz2C3jAAAABGdBTUEAALGPC/xhBQAAAAFzUkdCBQAAAAB3NzaC1简单.png
एवं
साहित्य साधना
प्रकरण- ३

३. श्री ब्रह्मानंद स्वामी का जीवन दर्शन एवं साहित्य साधना

प्रस्तावना

३.१ ब्रह्मानंद स्वामी का जीवन दर्शन

३.१.१ जन्म एवं जन्ममूृूि
३.१.२ माता-पिता एवं नामकरण
३.१.३ जाति
३.१.४ शिक्षा एवं संस्कार
३.१.५ सहजानंद स्वामी से मिलन एवं दीक्षा
३.१.६ उपाधि, सत्कार एवं सम्मान
३.१.७ कवि व्यक्तित्व

३.१.७.१ बाह्य व्यक्तित्व
३.१.७.२ आंतरिक व्यक्तित्व
३.१.७.३ दीक्षा के बाद का व्यक्तित्व

३.१.८ ब्रह्मानंद स्वामी के जीवन प्रसंग

३.१.८.१ चमत्कारिक प्रसंग
३.१.९ कवित्व शक्ति का उदय

३.१.१० ज्ञानार्जन हेतु भूपज प्रयाण
३.१.११ काव्य प्रतिभा का आकर्षण
३.१.१२ मुनिबाबा को सत्संगी बनाया
३.१.१३ निर्सृरही ब्रह्मुनि
३.१.१४ वृक्षों का कल्याण
३.१.१५ ब्रह्मुनि भगवान

१५४
3.1.16 क्षमामूर्ति ब्रह्मान्द स्वामी
3.1.17 स्वामी की आयुवृद्धि
3.1.18 गौ लोक में स्वामी के कीर्तन
3.1.19 सत्संग की माँ
3.1.20 कल्याणकारी ब्रह्मान्द स्वामी
3.1.21 दर्शन का प्रतिबंध हटाया
3.1.22 ब्रह्मान्द स्वामी के ईश्वरीय चमत्कार
3.1.23 वचन सिद्ध ब्रह्मान्द स्वामी
3.1.24 श्री हरि के सख्त
3.1.25 गुणों के सागर ब्रह्मान्द स्वामी
3.1.26 कलाओं में पारंगत ब्रह्मान्द स्वामी
3.1.27 शताब्दियाँ एवं सहस्राब्दियाँ
3.1.28 खटविद्याओं एवं अष्ट विद्याओं
3.1.29 विविध भाषाओं के ज्ञानी
3.1.30 साहित्यकारों के प्रति स्नेह
3.1.31 श्री हरि की ढाढ़ी के रूप में
3.1.32 संतों की ‘माँ’ ब्रह्मान्द स्वामी
3.1.33 काव्य चतुर्गाई की प्रमोदतरी
3.1.34 गुणों के सागर ब्रह्मान्द स्वामी
3.1.35 ब्रह्मान्द स्वामी का शिष्यवृत्त
3.1.36 ब्रह्मान्द स्वामी की काव्य विरासत
  3.1.36.1 ब्रह्मान्द स्वामी
  3.1.36.2 पूजान्नंद स्वामी
  3.1.36.3 ब्रह्मान्द स्वामी
3.9.36.4 गढ़वी वजाभाई महेंद्र
3.9.36.5 गढ़वी बनाभाई रत्नुं
3.9.36.6 शेष रुपसिंह भाई
3.9.36.7 शेष अमरचंद भाई
3.9.36.8 विक्रम केशवराम वाघजी वैद
3.9.37 ब्रह्मानंद स्वामी के जीवन के अन्य प्रसंग
3.9.38 काम का विरह
3.9.39 ब्रह्मानंद स्वामी की चित्र प्रतिमा
3.9.40 ब्रह्मानंद स्वामी का देहावसान

3.2 ब्रह्मानंद स्वामी का साहित्य परिचय

3.2.1 समृद्धि प्रकाश
3.2.2 विवेक चिंतामणि
3.2.3 उपदेश चिंतामणि
3.2.4 संप्रदाय प्रदीप
3.2.5 गुजरात को अंग
3.2.6. झूलणा
3.2.7 धर्मवंश प्रकाश
3.2.8 नीति प्रकाश
3.2.9 वर्तमान विवेक
3.2.10 छंद रत्नावली
3.2.11 शिक्षाप्रती (हिन्दी-गुजराती)
3.2.12 दशवतार चरित्र
3.2.13 सतीगीता
3.2.14 ब्रह्म विलास
3.2.15 उपदेश रत्न दीपक
3.2.16 नारायण गीता
3.2.17 धर्म सिद्धांत
3.2.18 धर्मकुल ध्यान (दीक्षाविधि)
3.2.19 ज्ञानप्रकाश चिंतामणि
3.2.20 ब्रह्मानंद काव्य भाग-1-2

3.3 समापन :
प्रकरण - ३

श्री ब्रह्मानंद स्वामी का जीवन दर्शन

स्वामिनारायण संप्रदाय के कवियों में प्रतिभा संपन्न युग पुरुष के रूप में ब्रह्मानंद स्वामी का स्थान विशेष उल्लेखनीय रहा है। उनकी एक अलग ही अस्मिता है। स्वामिनारायण संप्रदाय के विकास में, साहित्योत्थात में, मंदिर स्थापना एवं निर्माण में तथा संगीत के क्षेत्र में ब्रह्मानंद स्वामी ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एक तरह से ब्रह्मानंद स्वामी स्वामिनारायण संप्रदाय रूपी सूर्य मंडल के जातवत्मन नक्षत्र हैं।

श्री अभिनवशानंद स्वामी ने एक छंद में कहा है -

ब्रह्मुपन भातुसम, मुक्त, प्रेम दो चंद।

और कवि उड़ण सम, कहे अभिनाशानंद।

हिन्दी साहित्य के इतिहास में बलभं संप्रदाय के अख्ताप कवियों में जो स्थान सूर्यदास का है, स्वामिनारायण संप्रदाय के अख्ताप कवियों में वहीं गैयकवूर्ण रंग ब्रह्मानंद स्वामी का है। काव्य सृजन और काव्य कौशल्य की दृष्टि में ब्रह्मानंद स्वामी के समक्ष दूसरा कोई कवि नहीं हुआ। वे प्रतिभा संपन्न कवि के साथ-साथ श्रेष्ठ शिल्पकार, सफल-संगीतज्ञ, उत्तम कलाकार, मधुर गायक एवं भावपूर्ण कीर्तिनकार थे। ब्रह्मानंद स्वामी पहले भक्त हैं, बाद में कवि।

धर्म, झान, वैराग्य और भक्ति रूपी स्तम्भ पर ब्रह्मानंद स्वामी ने साहित्य रूपी महल का निर्माण किया है, जिसमें सहजानंद कृष्ण की माधुरी मूर्ति की स्थापना की है। अपने पदों में उन्होंने उपदेशात्मक, तीतात्मक भाव दशाओं का मोहक एवं सूक्ष्म वर्णन करते हुए उत्कृष्ट कौशल का परिचय दिया है।

श्रीप्रेम काव्य सृजन, कुशल, संगीतज्ञ और बाल अद्य ब्रह्मचर्य की त्रिवेणी के कारण ब्रह्मानंद स्वामी के साहित्य में भक्ति की असीम धारा प्रवाहित हो रही है। ब्रह्मानंद स्वामी का साहित्य उनकी प्रतिभा का ही परिचयक रहा है। इस महान चरित नायक ने श्रीकृष्ण एवं सहजानंद स्वामी के प्रति सख्यावान से भक्ति की है। ब्रह्मानंद स्वामी ने सहजानंद स्वामी में पहले अपने
गुरू तत्पश्चात्प पूर्ण-पुरुषोत्तम के दर्शन किये हैं । ब्रह्मानंद स्वामी की वाक्यपुट्टा एवं शीघ्र कवित्व शरिफ से संप्रदाय दी नहीं किन्तु मानव मन आकर्षित हुआ है । उन्होंने हदभगति निर्मल एवं शुद्ध भाव से साहित्य साधन की है । इसी भक्ति पूर्ण पत्रिविधारा से संप्रदाय एवं साहित्य पावन हुआ है ।

ब्रह्मानंद स्वामी ने सहजानंद स्वामी की आज्ञा एवं इशारों से काय्य सुजन किया है । वे उनका सख्त ही नहीं किन्तु पूर्ण पुरुषोत्तम सर्जननार हेद सर्वसच मानकर आत्मसमर्पण करते थे ।

अतः ब्रह्मानंद स्वामी का साहित्य समर्पण के साथ आत्मानुभूति एवं पूर्ण निश्चाल भावयुक्त रहा है ।

3.1 ब्रह्मानंद स्वामी का जीवन दर्शन :  

ब्रह्मानंद स्वामी जैसे परम विश्व विभूति के हिन्दी काय्य का विीलेषण करने से पूर्ण उनके जीवन की ज्ञानी करना आवश्यक हो जाता है । इस दृष्टि से ब्रह्मानंद स्वामी के जीवन के प्रमुख प्रसंगों पर दृष्टिपात करना सभीस्वी है ।

ब्रह्मानंद स्वामी के स्वामिनारायण संप्रदाय में दीक्षित होने से पहले और तत्पश्चात के परिवर्तित व्यक्तित्व को देखना आवश्यक है, क्योंकि व्यक्तित्व ही साहित्य पर अभिर छाप छोड़ जाता है । ब्रह्मानंद स्वामी का जन्म, रथ, जयंति, माता-पिता, गुरू, शिष्या-दीक्षा इत्यादि की जानकारी हमें यदाकदा अंतःसंक्षेप में दिए गए आत्मसचित्य या फिर अन्य बाह्य साहित्यों के द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर देनी पड़ती है ।

ब्रह्मानंद स्वामी का जीवन कैसा था । वे दीक्षित होने से पहले कैसे थे । कैसा जीवन जीते थे । उनका संप्रदाय में आगमन कैसे हुआ । शिष्या कहाँ से प्राप्त की । साहित्य कैसे निर्मित हुआ । संप्रदाय में उनका क्या योगदान रहा । इत्यादि अनेक सवालों के संतोष पूर्ण उत्तर देने का यहाँ सभीस्वी प्रयास किया जा रहा है ।

कव सूर्यप्रभों वंशः कव चाल्यविष्णु मतिः ।
तितीपुरुषस्त्रं मोहादुशुनास्मि सारस्मु ॥(२)
(कहाँ सूर्य से उत्पन्न वंश और अल्प विषय को जानने वाली मेरे बुद्धि। मैं वात्सव में मोह के कारण वश नाश द्वारा समंदर पार करने की इच्छा रखता हूँ।
कालिदास की इस उद्वित की तरह महापुरुषों के कौशल्य का परिचय देना हास्यास्पद ही है। फिर भी यहाँ ब्रह्मानंद स्वामी का जीवन आदर्शों का परिचय देकर ब्रह्म आनंद देने और लेने का प्रयत्न किया गया है।

श्री ब्रह्मानंद स्वामी की परिचयात्मक तालिका :

स्मरण पत्रक परिचय

<table>
<thead>
<tr>
<th>पहचान</th>
<th>परिचय - जानकारी</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1 उदरस्थ बालक</td>
<td>'हे स्वामी! प्रगट पुरुषोत्तम की महिमा की बात कहें!'\n</td>
</tr>
<tr>
<td>2 प्रादुर्भाव : जन्म</td>
<td>'वसंत-पंचमी' - माघ शुक्ला पंचमी, संवत-1828,\n</td>
</tr>
<tr>
<td>3 जन्मक्षेत्र (भूमि)</td>
<td>'खाल'-ग्राम, डुंगरपुर, आबु, शिहोरी राज्य, राजस्थान।</td>
</tr>
<tr>
<td>4 जन्मदाता (पिता)</td>
<td>शंभुदान गढ़वी, राजकवि।</td>
</tr>
<tr>
<td>5 जन्मदात्री (माता)</td>
<td>लालुबा देवी (महासती)।</td>
</tr>
<tr>
<td>6 जन्म (पूर्वश्रम) नाम</td>
<td>लालुबा।</td>
</tr>
<tr>
<td>7 उपनाम</td>
<td>कविकुमार।</td>
</tr>
<tr>
<td>8 शाखा</td>
<td>आशिया।</td>
</tr>
<tr>
<td>9 कुल</td>
<td>मारू, चारण।</td>
</tr>
<tr>
<td>10 कुलदेवी</td>
<td>आवड माता।</td>
</tr>
<tr>
<td>11 कुल गोर</td>
<td>श्री शिवशंकर पंड़या (आचार्य ग्रामीण पाठशाला)</td>
</tr>
<tr>
<td>12</td>
<td>कुलगुरू</td>
</tr>
</tbody>
</table>
| 13 | शुभ चिठ्ठ | दाढ़ी हाथ में - पद्म चिठ्ठ।  
दाढ़ी पाँव में - उद्देश्य, स्वरतिक। |
| 14 | बुद्धि - प्रतिभा (मेघा) | कुशाग्र बुद्धि, प्रगत यात्रदास। |
| 15 | संस्कार संचन | माला-पिता-परिवार-स्नान, पूजापाठ, योगासन आदि। |
| 16 | अन्य गुरु | • चाचा-हरदानजी, - अश्रुकलामें पारंगत क्रिया; अश्रु की  
चाल, पहचान, तालीम आदि।  
• अभयदानजी  
• आचार्य विजयकुशल  
• श्री भद्राचार्यजी  
• श्री मुनिवाबा – सूरत – मठाधीश। |
| 17 | ननिहाल | भापड़ी (मालकी) कङ्घणा के पास, जोधपुर-राज्य। |
| 18 | मामा | अमरदानजी। |
| 19 | शिक्षा - विद्याभ्यास (प्राथमिक शिक्षण) | प्राथमिक : ७ सालकी आयु पर ग्रामीण पाठशाला खण्ड-ग्राम |
| 20 | देवी आदेश | माला-पिता दोनों को स्वच्छ में आदेश: भूज-कच्छ-लखपत,  
पिंगल शास्त्र में सिपूर्णता प्राप्ति का आदेश। |
| 21 | वेदिशाल (मंगनी) | पावन पुरुष के हाथों विधि का आयाम, पर पावन पुरुष का  
निर्णय : कुल गोर द्वारा ही विधि। |
| 22 | भूज यात्रा | भूजेद से शाधारी पुरुषोत्तम के साथ वि.सं. १८४५ में,  
कविकुमार का मानस परिवर्तन। |
| 23 | उच्च शिक्षण | • १२ वर्ष, १५ वर्ष, १८ वर्ष तक लखपत, पिंगल-पाठशाला  
-कच्छ |
<table>
<thead>
<tr>
<th>सू.</th>
<th>शास्त्रीय-वृक्ष</th>
<th>करील का छोटा वृक्ष, गोलाकार छोटे बेर जैसा फल, जिससे अचार बनता है।</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>25</td>
<td>विवाहित / अविवाहित</td>
<td>अविवाहित।</td>
</tr>
<tr>
<td>26</td>
<td>सहजानंद स्वामी से प्रथम मिलन</td>
<td>सं. १८३०</td>
</tr>
<tr>
<td>27</td>
<td>दीक्षागुरु</td>
<td>श्री सहजानंद स्वामी।</td>
</tr>
<tr>
<td>28</td>
<td>दीक्षा समय</td>
<td>संवत-१८६९ (कारियाणी)</td>
</tr>
<tr>
<td>29</td>
<td>दीक्षा समय उम्र</td>
<td>३३ वर्ष</td>
</tr>
<tr>
<td>30</td>
<td>दीक्षा स्थान</td>
<td>कारियाणी</td>
</tr>
<tr>
<td>31</td>
<td>दीक्षा ग्रहण नाम</td>
<td>श्री रंगदान, बाद में - ब्रह्मानंद स्वामी।</td>
</tr>
<tr>
<td>32</td>
<td>आधारभूत ग्रंथ</td>
<td>ब्रह्मानंद काय्य भाग-१, २</td>
</tr>
<tr>
<td>33</td>
<td>पद संख्या</td>
<td>२५६४ : पद :</td>
</tr>
<tr>
<td>34</td>
<td>कुल ग्रंथ</td>
<td>हिन्दी : ७५ + गुजराती : ६ = २१ ग्रंथ</td>
</tr>
<tr>
<td>35</td>
<td>सहजानंद स्वामी का स्वाधाम गमन</td>
<td>उम्र : ५८ वर्ष, संवत् - १८८६, ज्येष्ठ शुक्ला दशमी - मंगलवार।</td>
</tr>
<tr>
<td>36</td>
<td>ब्रह्मानंद स्वामी का स्वाधाम गमन</td>
<td>मूली, उम्र - ६० वर्ष</td>
</tr>
<tr>
<td>37</td>
<td>सहजानंद स्वामी से बडे/छोटे</td>
<td>९ वर्ष बडे।</td>
</tr>
<tr>
<td>38</td>
<td>सहजानंद स्वामी का साधनिक्षय</td>
<td>२५ वर्ष।</td>
</tr>
<tr>
<td>नं.</td>
<td>पद्धति</td>
<td>सहजानन्द स्वामी।</td>
</tr>
<tr>
<td>-----</td>
<td>--------</td>
<td>------------------</td>
</tr>
<tr>
<td>40</td>
<td>संप्रदाय</td>
<td>स्वामिनारायण।</td>
</tr>
<tr>
<td>41</td>
<td>संप्रदाय ग्रंथ</td>
<td>सत्साहित्य—चारवेद, व्याससूत्र, आदि</td>
</tr>
<tr>
<td>42</td>
<td>मंत्र</td>
<td>स्वामिनारायण।</td>
</tr>
<tr>
<td>43</td>
<td>संप्रदाय मान्य शास्त्र</td>
<td>चार वेद, व्यास सूत्र, श्रीमदभागवतपुराण, विष्णुसहस्रनाम, विदूर्ण नीति, श्रीवासुदेव महात्म्य, याज्ञवल्क्य स्मृति।</td>
</tr>
<tr>
<td>44</td>
<td>आज्ञा पत्र</td>
<td>शिक्षापत्र ।</td>
</tr>
<tr>
<td>45</td>
<td>अमृतवाणी</td>
<td>वचनामृत।</td>
</tr>
<tr>
<td>46</td>
<td>सहजानन्द स्वामी के पद्धति</td>
<td>ब्रह्मानंद स्वामी</td>
</tr>
<tr>
<td>47</td>
<td>सहजानन्द स्वामी के संहा</td>
<td>1) ब्रह्मानंद स्वामी</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>2) सुराखाचर (लोया)</td>
</tr>
<tr>
<td>48</td>
<td>सेवा रीति प्रकार</td>
<td>इष्टदेव श्री सहजानन्द स्वामी के श्री कृष्ण स्वरूप के प्रति अहोभाव, सेवा, पूजा, कीर्तन, संजीभाव।</td>
</tr>
<tr>
<td>49</td>
<td>निर्माण</td>
<td>1) मूली मंदिर – सं. १८७९, वसंत पंचमी (हरकृष्णदेव)</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>2) वडलाल – सं. १८८९, कार्तिक सुदी–१२ (लक्ष्मीनारायण)</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>3) जुनागढ – सं. १८८४, वैशाख वद–२, (राधार्मण देव)</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>अहमदाबाद – सं. १८७८, (नरनारायणदेव)</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td>(ब्रह्मानंद स्वामी के मार्गदर्शन में निमित)</td>
</tr>
<tr>
<td>50</td>
<td>२४-कलाओं में पारंगत</td>
<td>गीत, वाणी, नृत्य, नाट्य, उद्योग, तैराकी, हस्तलाख, पाकशास्त्र, पहेलिका, प्रतिमाला, वाचन, नाटकाल्याणिका, समस्यापूर्ति, तर्कवाद, रथकारकला, शिल्प, रूपरत्न परीक्षा,</td>
</tr>
<tr>
<td>59</td>
<td>प्रमुख विशेषताएं एवं प्राप्त सम्मान</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>----</td>
<td>----------------------------------</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>संगीत, काव्य, कलाएं, ज्योतिष, सामुद्रिक, खगोल, आरोग्य, शिल्प, नीतिशास्त्र, अश्वविद्या, गजविद्या, शुक्रनीति, चाणक्यनीति, अंगदनीति, विद्वूरनीति, शीघ्रवाकशक्ति, विनोदप्रीय स्वभाव, शीघ्र उत्तरदाता, प्रखर दार्शनिक, बुद्धि प्रतिभा, आर्थिक, निष्ठा, सैद्धांत, उपदेश, आध्यात्मिकता, व्यावहारिकता एवं प्रखर पंडित इत्यादि</td>
<td></td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

अष्टाध्यायी, शताध्यायी, सहस्राध्यायी, राजकवितन, पिंगलाचर्य, महामहोपाध्याय, शीघ्रवीक्षर, संगीताचार्य, इत्यादि

भूज, ध्रुगंध्रा, जामनगर, जूनागढ, भावनगर, बड़ोदरा, सोमनाथ, दारिका, गढ़ा, सूरत आदि छोटे-बड़े राज्यों में ब्रह्मांद स्वामी को अनेकानेक राज सम्मान, बहुमान राजकवि खिताब प्राप्त हुए थे। ये कीर्तिमान प्राप्त थे।

### 3.1.1 जन्म एवं जन्मभूमि:

ब्रह्मांद स्वामी के जन्म एवं जन्मभूमि को लेकर संप्रदाय के करीब सभी ग्रंथों में एकस्थता के दर्शन होते हैं।

ब्रह्मांद स्वामी का जन्म राजस्थान के आबू के पास आये हुए शिरोही राज्य के ‘खाण’ नामक गाँव में वि.सं. १८२८ माघ शुक्ल पंचमी वसंतपंचमी (दिनांक ८ फरवरी, १७७२ शनिवार)को हुआ।

ब्रह्मांद स्वामी का जन्म स्वामिनारायण संप्रदाय के लिए एक विशेष घटना है। श्री नवीनदासजी रल्लुं ब्रह्मांद स्वामी के जन्म समय का अर्थत ही भावपूर्ण एवं मार्मिक वर्णन करते हैं।
- "केदारेश्वर महादेव के मंदिर में शंखनाद हो रहा था। सभी देवालयों में आती नाद के साथ अंतरिक्ष में असंख्य दीप ज्योतियाँ प्रजवलित हो उठीं। माहोल में चंदन की पवित्र महक का भी अनुभव न किया हो। ऐसा शांत प्रगाढ़ और शीतल प्रकाश पूरे खाण गाँव को आलोकित कर रहा था। ठीक उसी क्षण शिरोही राज्य के देशों के राजकवि श्री शंभुदासजी के गर्व श्री लालुबादेवी ने पुत्रकल को जन्म दिया।"(५)

3.1.2 माता-पिता एवं नामकरण:

शिरोही राज्य के देशों के राजकवि श्री शंभुदासजी और महासती लालुबा देवी को ब्रह्मान्द के माता-पिता होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। निश्चितानंद स्वामी ने 'भक्त-विचारणी' में ब्रह्मान्द स्वामी के जन्म एवं माता-पिता का उल्लेख इस प्रकार किया हैं-

'खरा भक्त कहिए खाण गाम, देव जाति शंभुदान नाम।
धरे लालुबाई हरिजन, जिन्होंने जन्म दिया लालुबी पावन।"(४)

लालु जैसे पुत्र कल को पाकर माता-पिता दोनों ने धन्यता की अनुभूति की। दोनों ही अत्यंत धर्मनिष्ठ, पवित्र, उदार और संवेदनशील स्वभाव के थे। अतः देवी अंश का अवतरण होना स्वाभाविक ही था। शंभुदास और लालुआ ने अपने पुत्र को श्रेष्ठ धार्मिक संस्कार दिये, परिणाम स्वरूप समाज, संप्रदाय एवं साहित्य को एक विरल विभूति की प्राप्ति हुई।

शंभुदास एवं लालुआ ने अपने इस पुत्रकल का नाम अपने कुलगुरु के सामाने शाश्वोकत विधि से बुता अमरका के द्वारा लालुदास(६) रक्खा। सहजानंद स्वामी से मिलन एवं दीक्षा के बाद लालुदासजी, श्रीरंग एवं बाद में ब्रह्मान्द नाम से प्रसिद्ध हुए।

3.1.3 जाति:

जाति से संबंध संसारी को ही है। सन्नाटी की एक ही जाति बनती है, भक्ति की। अधीरजी कहते हैं-

'जाति पाँचू पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई।' शायद इसीलिए भक्तजनों की जाति का विषय सदा ही संवेदनशील रहा है और हम यह कहकर संतुष्ट होते हैं कि नदी का मूल और ऋषि का कुल नहीं ढूँढना चाहिए। फिर भी जिज्ञासु
जन-मन सदैव भक्तों के जीवन संबंधित जानकारी प्राप्त करने की इच्छा बनाए रखता है।

ब्रह्मानंद स्वामी की जाति का स्थान उल्लेख अंतः बाह्य साक्षी द्वारा मिलता है।

श्री नवीनदान रत्नुं ब्रह्मानंद स्वामी की जाति को लेकर यह दोहा लिखते हैं—
कुठा चारण पावन करन, धरन हीर दील ध्यान।

ब्रह्म प्रगट परिश्रंख संग, मानव देह महान।

लालूदानजी ज्ञाति से चारण (गदवी) थे। इस बात का उल्लेख सांप्रदाय के साहित्य में मिलता है। उ. इंशरलाल द्वे ब्रह्मानंद स्वामी की जाति को लेकर लिखते हैं— वे मारु चारण कुल के आशिया शाखा के गदवी थे।

ब्रह्मानंद स्वामी ने अपना परिचय देते हुए अंतिम समय में देवानंद स्वामी से कहा था—
ज्ञाति चारण ओह्रक आशियों की, आदु छांव भयो ख़ान गाम में जी।

बके नाम शंभुदान तात हु का, मात लालुबाई धरों ढाम में जी।

लालु मेट के श्री रंग नाम धरों, दोऊ लीन ब्रह्मानंद नाम में जी।

पिता धरि सहजानंद श्याम छबी, जगजीत गयो निज धाम में जी।

प्रस्तुत पद में ब्रह्मानंद स्वामी ने अपना समग्र परिचय दिया है। जाति-ओह्रक चारण,
जन्म स्थान-ख़ान गाम, पिता-शंभुदान, माता-लालुबाई, नाम-बचपन में लालु, किशोरावस्था में
श्रीरंग, युवावस्था में शिक्षा एवं दीक्षा के बाद ब्रह्मानंद, गुरु—सहजानंद स्वामी, ध्येय एवं मुक्ति
की प्राप्ति।

इस प्रकार ब्रह्मानंद स्वामी के इस आत्म परिचय देने से जिज्ञासु को बढ़ी सहजता से
उनके जीवन की जानकारी प्राप्त हो जाती है।

3.1.4 शिक्षा एवं संस्कार:

ब्रह्मानंद स्वामी स्वामिनारायण सांप्रदाय के सर्वाधिक बुद्धिमान, श्रानी, चतुर एवं पद्धे—
लिखे सुशिक्षित संत हैं। बुद्धि चालुर्य की दृष्टि से ब्रह्मानंद स्वामी प्रथम पंक्ति के सिद्ध हस्त भक्त
कवि हैं।

१६६
पिता राजकवि श्री शंघुदानजी तथा माता लालुबा देवी ने अपने बालक में सर्वोत्तम संस्कारों का सिंचन किया था। कवि पिता की विरासत मिलने के कारण पुत्र लालु ने मानो बोलना ही काव्य गुंजन से प्रारंभ किया। ‘पुत्र के लक्षण पालने से’ इस गुजराती कहावत को ब्रह्मानंद स्वामी ने सिद्ध कर दिया है। शाने: शाने: उनकी कवित्व शक्ति उदित होती चली गई। कवि से महाकवि और फिर राजकवि के रूप में ब्रह्मानंद स्वामी का यवितत्व निरंतर निभाया गया।

विरासत में मिले काव्य संस्कार को अलंकृत करने की दीक्षा ब्रह्मानंद स्वामी को सर्वत्र सात साल की आयु में ही कुलपुरुष आचार्यर्व शिवशंकर(६०) की ग्रामीण पाठशाला से प्रारंभ की। वे गुरुनृथं से दिये गये पाठ केंद्रस्थ करते जाते थे।

पाठशाला की शिक्षा के साथ ब्रह्मानंद स्वामी में घर परिवार से भी शिक्षा का संचार होता रहा। प्रति: काल होते ही कुलदेवी दर्शन, देवलय दर्शन जैसे धार्मिक संस्कार मिलते रहे, साथ ही बचपन से ही योगाभ्यास, शख्सविद्या, घुड़सवारी, संगीत जैसी शिक्षा मिलती गई। बच्चा हरसाथदान से घुड़सवारी के साथ विविध नस्ल के अश्व, अश्व लक्षण, अश्व दौड़ जैसी जानकारियाँ भी मिली।(३९)

लालुदानजी को काव्य संस्कार विरासत में मिला था। उसे अलंकृत करने के लिए उस प्रतिभा को और असाधारण बुद्धिबल युक्त बनाने के लिए केवल ७८ साल की आयु में लालुदान को कच्च की ‘लघुतं मिन्गल पाठशाला’(६२) में गुरुभ्रेष्ट चारण कुलभूषण आचार्य राज कवि श्री अभयदानजी(६३) के पास भेज दिया। ९० साल भूज और २ साल धमकड़ा गाँव में रहकर ब्रह्मानंद स्वामी ने अनेकांकें उपाधियाँ प्राप्त की।

काव्य शक्ति, तर्क शक्ति, याद शक्ति एवं श्रीप्र काव्य शक्ति जैसी ईश्वरीय शक्तियों के अलावा ब्रह्मानंद स्वामी में श्रीप्र ज्ञाव शक्ति (आशु बुद्धि) एवं सूंदरस्वात शक्ति भी थी। विद्याभ्यास के साथ-साथ उन्होंने संगीत की साधना भी की। वे सितार, नगड़ा, नर्दार (तबला) जैसे बाद सीखकर संगीताचार्य बने थे। संगीत एवं संस्कृत उन्होंने ‘धमकड़ा’ गाँव में संगीतव आचार्य विजय कुशलजी के संपर्क में आकर सिखा था。(४४) इस प्रकार लालुदान संगीत, साहित्य और कला का ज्ञान धमकड़ा गाँव से ही प्राप्त कर प्रतिभावान बिन्दु बने।

१६७
भूज में रहकर ब्रह्मान्द स्वामी ने पिंगल शास्त्र का गहन अभ्यास किया । पिंगल शास्त्र के साथ-साथ योग शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र, सामुत्तिक शास्त्र, मानस शास्त्र, तर्क शास्त्र, संगीत शास्त्र, खगोल शास्त्र, भूसूतर शास्त्र, शिल्प एवं स्थापत्य शास्त्र तथा आरोप शास्त्र जैसे एकाधिक ज्ञानप्रद अभ्यास क्रमों का गहन अध्ययन करके उन्होंने निपुणता प्राप्त की ।

ब्रह्मान्द स्वामी का बहुमुखी व्यक्तित्व विस्मय एवं विमुख कर देता है । पिंगल शास्त्र का अथाह ज्ञान, संगीत एवं गायन-वादन की गहरी दक्षता कविता और आशु कविता की अदभुत शक्ति और सबसे ज्यादा आश्चर्यजनक बात तो यह है कि पथरो और काछ से निर्मित भव्य मंदिरों के स्थापत्य एवं निम्नाण की गहन जानकारी होने के कारण अहमदाबाद, वड़ादल, जुनागढ और मूली में स्वामिनारायण के भव्य मंदिरों का निर्माण उन्हीं के मार्गदर्शन में हुआ है।

अपने गुरु श्री भद्राचार्य के कहने पर लाडुजी ने ‘कलामिषुण’ होने की ईच्छा प्रकट की । जैसे श्री कृष्ण सांदिनी कृषि के आश्रम में ६४ दिनों में ६४ कलाओं का ज्ञान अर्जित किया था । वैसे ही लाडुजन ने भी श्री भद्राचार्यजी के पास से यात्रा करके २८ कलाओं में निष्णांत बने थे ।

उन कलाओं में गीत, वाच, नृत्य, नाट्य उदकवाद (पानी भरे पात्र को बजाना), तैरना, हस्तलाभ, पाकशर, पहेलियाँ, प्रतिभाजन (तुरंत जवाब देना) वाचन-कला, नाटकार्याधिका दर्शन, काव्य समर्पण, तर्कवाद, धर्मकार कला, शिल्प कला, रूप रत्न परीक्षा, अक्षर भुषिका कथन (दूर बैठे, व्यक्ति कथा लिखता है), शुकन कला, संगीत मानसी काव्य, अभिधान कोष, छंदोज्ञान, क्रिया विकल, आकर्षक्रिया । इन चारीस कलाओं के अलावा लाडुजन ने शुकनिति, चाणक्यनिति, विद्वत्निति, अमदिति, राजनिति जैसे नीति शास्त्रों का अभ्यास भी ‘श्री भद्राचार्यजी के पास ही किया था । ब्रह्मान्द स्वामी ने गुजराती, हिन्दी, संस्कृत, चारणी, ब्रजभाषा एवं साहित्य का गहन अध्ययन किया था।

इस प्रकार मानो सरस्वती ब्रह्मान्द स्वामी की जिह्या पर आसीन हुई हो । इसी तरह ब्रह्मान्द स्वामी सर्वगुण संपन्न बने । वे अपनी विद्वत्ता, भक्तिमित्व एवं अपनी भावानुभूति गुजराती, हिन्दी, संस्कृत, ब्रज, चारणी जैसी विभिन्न भाषाओं के द्वारा प्रकट करते थे ।
स्वभाव से विनम्र, ज्ञान से परिपूर्ण, दिखने में आकर्षक, ऐसे ब्रह्मानंद स्वामी जहाँ गये अपने ज्ञान एवं प्रतिभा से सबको चकराँ धाँ करते रहे।

3.1.5 सहजानंद स्वामी से मिलन एवं दीर्घाकः

सहजानंद स्वामी की दिव्य दृढ़ पड़ते ही किसी भी व्यक्ति का मोहित हो जाना सहज था और उसमें भी ब्रह्मानंद स्वामी जैसे विशेष व्यक्तित्व को सहजानंद का स्पर्श होना ’’सोने में सुहागा’’ है। ब्रह्मानंद स्वामी दीर्घाकः से पूर्व ही एक प्रतिभावान, ज्ञानवान राजकवि थे। उस कवित्व को सहजानंदी भविष्य का स्पर्श होते ही ब्रह्मानंद स्वामी के कथाओं में एक अलग ही भवावरक वाणी प्रस्फूटित होने लगी।

लाखुदान ब्रह्मानंद कैसे बने? इसे जानने के लिए लाखुदान का सहजानंद से प्रथम मिलन एवं दीर्घाकः का परिचय जानना होगा।

बचपन के धार्मिक संस्कार, देवीय चमकाता तथा सहजानंद स्वामी के संस्कार में ब्रह्मानंद स्वामी को भक्तिमार्ग में दीक्षित एवं विकसित किया। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न, प्रखर प्रजा पुरुष, महाजनी पंक्ति, महाकविराज श्री लाखुदानंदजी ने शिक्षा प्राप्ति के बाद बड़े-बड़े राज्यों में घूमते हुए अनेक सिद्धियों पात्र की थीं। साथ ही अपने पांडवियों का प्रदर्शन भी हुआ। श्रीमद कवित्व शक्ति, श्लोकाद्धार शक्ति से लोगों को मोहित कर देते थे। एक बार अपने व्यक्तित्व का परिचय देने के लिए लाखुदान भावनगर के महाराज श्री वजेसिंगजी बापू के दरबार में पहुँचे। वहाँ उन्होंने अपने विश्वचार तथा श्रीमद कवित्व शक्ति का परिचय दिया। लाखुदान से प्रभावित राजा ने सुनार को बुलवाकर आभूषण बनवाकर लाखुदानजी को सम्मानित एवं बहुमातित किया था।

यहाँ महत्त्व पूर्ण बात यह हुई कि सुनार वस्मिनारायण संप्रदाय का हार्मोनिक था। उसने संप्रदाय का तिलक किया हुआ था। तिलक को देखकर लाखुदानजी मजाक करने लगे। उन्होंने मन ही मन वस्मिनारायण भगवान की कसौटी करने की बात सोच ली। यह कसौटी लाखुदानजी के जीवन को परिवर्तन करनेवाली बन गई।

वस्मिनारायण सचमुच ईश्वर के अवतार हैं। इस ईश्वरीय परख हेतु मन ही मन संकल्प करके गढ़ गये। वहाँ कदम रखते ही चंचल मन शांत एवं सिर्फिकार हो गया। साथ

169
ही एक अद्भुत शांति का एहसास हुआ। अभेल खाचर के दरबार में लाङ्दुनान को श्रीजी के दर्शन हुए।

सहजांनंद स्वामी की कसौटी करने की बात उनके दर्शन मात्र से विस्मृत हो गई। इतना ही नहीं उलटे वे उनसे प्रभावित हो गये। अपने मन के सारे संकल्प पूर्ण होने से अब कसौटी करने का सवाल ही नहीं रहा। इश्वरीय अनुभूति होते ही ज्ञान एवं गर्व चकना चूर हो गया; और स्वयं समाधी हो गये। उस भरी समा में उनकी मस्ती में मस्त होकर तन की सुध-बुध भूलकर नृत्य के साथ गान करने लगे-

“आजनी घडी रे धन्य आजनी घडी,
में नीरख्या सहजांनंद धन्य आजनी घडी”।

(आज की श्लोक रे – धन्य आज की श्लोक, नैनों ने देखे, सहजांनंद, धन्य आज की श्लोक।)

कहते हैं उस समय स्वयं सरस्वती शाप शरिता बनकर लाङ्दुनान के मुख से बहने लगी थी। प्रथम मिलने से ही आयार प्रेम के दर्शन हो गये। तब से लाङ्दुनान सहजांनंद स्वामी के पास रहे और उनकी प्रेरणा से प्रेरित तृषू शात्र्य रचना करने लगे। धौरे-धौरे वे सहजांनंद के अंतरंग संख्य बन गये। सहजांनंद स्वामी ने धौरे-धौरे लाङ्दुनान के राजसी ठाट छड़वाकर वैराग्य उत्पन्न करवाया। यह घटना वर्णनीय है।

लाङ्दुनान के राजसी ठाट छड़ने हेतु सहजांनंद स्वामी ने लाङ्दुनान को एक कठिन कार्य संपन्न करने को कहा – “गढ़ड़ के अभेल खाचर की युवा बेटियाँ लाङ्दुनान और जीवुबा दोनों गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने से मना करती हैं। उन्हें समझाकर गृहस्थाश्रम में लगाना है।”

लाङ्दुनान को स्वयं पर अटूट विश्राम था। किन्तु चाल उलटी पड़ी स्वयं ज्ञानी वैरागी होकर लौट आये। साक्षात्कार लक्ष्मी समान लगने वाले जीवुबा को उन्होंने ज्ञान गुरु के रूप में स्वीकार किया। जिस प्रकार गोपियोंने उद्देश्य को ज्ञान दिया था, तीक कैसे ही जीवुबा – लाङ्दुनान ने लाङ्दुनान को संदेश दिया। सहजांनंद स्वामी के पास लौटकर लाङ्दुनान ने अपना राजसी ठाट-वैभव सहजांनंद स्वामी के श्री चरणों में समर्पित करते हुए आत्म समर्पण किया। तब श्रीजी ने
लाड़ को दीक्षित करने का निर्णय किया। १९६५<sup>२३</sup> में सहजानंद स्वामी ने कार्यालयी गाँव में वेदान्त विद्वान से सर्व प्रथम दीक्षा देकर लाड़ान्दजी को दीक्षित किया।<sup>२२</sup>

श्रीजी के रंग में रंगजाने के कारण लाड़ान्दजी का दीक्षित नाम रंगदासजी रखा गया। तत्पश्चात रंगदास भक्ति भाव में आकर ब्रह्म के आनंद में लीन हो जाने के कारण ब्रह्मानंद नाम प्रदान किया।

“लाड़ान्ड के श्रीरंग नाम धयों,
दोऊ लीन ब्रह्मानंद नाम मे जी।”<sup>२३</sup>

दीक्षा के बाद लाड़ान्दजी अपनी शक्ति, भक्ति, व्यक्तित्व, कृतित्व आदि सर्वस्व सहजानंद स्वामी के श्री चरणों में समर्पित करते हुए उन्होंने के गुणान्व ने ब्रह्मलीन हुए।

इस प्रकार कवि ने लाड़ान्द, श्रीरंग और ब्रह्मानंद तीनों ही नामों से कायम सुजन किया है।

3.1.6 उपाधि, सतकार एवं सम्मान:

चारण कुल भूमिका आचार्य श्री राजकवि अभयदान्दजी के पास लखपत में १० साल तक रहकर श्री ब्रह्मानंद स्वामी ने पिण्यशख्त, वारणी शास्त्र तथा संस्कृत, ब्रज, हिन्दी साहित्य का गहन अध्ययन किया। विशिष्ट प्रतिभा के कारण भूज में उनको ‘राज्य कवि रत्न’, ‘पिण्य विद्वान्य’, ‘सहस्वाभानी’, ‘महामोहाध्याय’, ‘महाशीघ्रकवि’ इत्यादि उपाधियों से सम्मानित किया गया। साथ ही उनको कई सुरूचि चंद्रक एवं प्रमाणपत्र प्रदान किये गये।<sup>२४</sup>

ब्रह्मानंद स्वामी संपूर्ण शिक्षा प्राप्त कर भूज राज्य का प्रमाणपत्र प्राप्त कर ब्रांगधा के दरबार में प्रधारे। वहाँ ‘शतावधान’ प्रयोग कर उपरिश्चत सब को स्तव्ध कर दिया। इतना ही नहीं हर्षोत्तिस्तल लोगों ने लाड़ान्दजी को देवतृत्व मान लिया। ब्रह्मानंद स्वामी के लिए यही सर्वोच्च उपाधि एवं सतकार था। ब्रांगधा में संमान एवं पुरस्कृत होकर वे जामनगर पहुँचे। जुनागढ़ में पुन: शतावधान प्रयोग किया। लाड़ान्दजी सोमनाथ होकर पालीताणा, भावनगर, गढ़ड़ा, बखेदरा पहुँचे। हरेक राजदरबार में लाड़ान्दजी का भव्य स्वागत अत्याधिक संपत्ति, विविध अमूल्य चीजें पुरस्कार के रूप में मिलती रहीं। इतना ही नहीं हरेक राज्य ने इस महाकवि को अपने राजकवि होने का सम्मान भी दिया।

१७१
व्याख्या प्रारम्भ में दीक्षित होने के बाद सहजांतं स्वामी ने ब्रह्मांद स्वामी को अधिक संपन्न बनाने के लिए मुनिबाबा नामक महान बिद्वेश महात्मा के पास सिद्धांत कौमुदी का अध्ययन करने सूरत भेजा ।(29) वहाँ मुनिबाबा से कौमुदी आदि ग्रंथों का अध्ययन किया ।

इस प्रकार ब्रह्मांद स्वामी कई उपाधियाँ प्राप्त करते गए । उन्हें छोटी उम्र से ही मान-सम्मान एवं सत्कार मिलता गया ।

3.1.7 कब्रि व्यक्तित्वः

मनुष्य की पहचान का महत्वपूर्ण आधार उनका व्यक्तित्व होता है । इस्लाम अपने आंतरिक एवं बाह्य सौन्दर्य से अन्य व्यक्तित्व को प्रभावित करता रहता है । ब्रह्मांद स्वामी का बाह्य एवं आंतरिक व्यक्तित्व ही कुछ ऐसा था कि सामने आया नहीं रह सकता।

3.1.7.1 बाह्य व्यक्तित्वः

विशिष्ट प्रतिभा संपन्न ब्रह्मांद स्वामी का बाह्य सौन्दर्य अदभुत था । यौवन प्रवेश काल के समय का बाह्य व्यक्तित्व किसी राजकुमार से कम नहीं दिखता था । उनमें एक अदभुत आकर्षण था । अपने देहात सौन्दर्य, शौकवर्ण एवं चाल के ढंग से सब कोई आकर्षित हो जाते । सूर्योदय के साथ ही जैसे अंधेशा अदृश्य हो जाता है, तैसे ही ब्रह्मांद स्वामी का आगमन एक दिव्य ज्योति फैलानेवाला था।

श्री नवीनदान रत्न ।(26) ब्रह्मांद स्वामी का बाह्य व्यक्तित्व का वर्णन करते हुए लिखते हैं - तेजस्वी, मजबूत एवं सशक्त शरीर, मारवाड़ी, मरोड़दार अंगवा, विशाल भाल, विशाल नेत्र, नाजुक सी नासिका, गौर गुलाबी गाल, मनोहर दाढ़ी, दाढ़ी मली से दाँत, कमल पती-सी सुकोमल जिंदा, कंबु कंठ, विशाल गठी हुई छाती, आजान बाहु, कदावदार सुकोमल काया, विशाल भाल में कमकु म चंदन, विशाल लाल नेत्र, काली भ्रमर सी बृंदी मूंछ, लम्बा, कोमल, कंठ, भरा हुआ विशाल तेजस्वी मुखारकिन्द, देदिया मान व्यक्तित्व, बुलंद आवाज अर्थ चंदल आकृति, देवगुप्त बुहरपति समान स्वरुपवान, राजहंस सी चाल, इन्द्रजांज जैसा श्रृष्टार्थ एवं पोषक से कविराज महाराज से कम प्रभावित न थे।
सोने में सुंगध मिली हो, वैसे ही ब्रह्मानंद स्वामी के व्यक्तित्व को और प्रभावित करनेवाला सुकोमल-केंद उनके व्यक्तित्व को चार बाँद लगाता था। वे जब छंदन करने लगते तो ऐसा लगता मानो सरस्वती जिहा पर बिराजमान हो वे अपनी सुंदर आवाज में सबको स्तब्ध कर देते थे। काय की अद्वैताचार्य गंगोत्री के समान मिरंतर बहने लगती। विनय पूर्ण एवं काय सैन्दर्भ से पूर्ण वाणी से जब वे बोलते तब सब प्रसन्न रह जाते। ऐसे ब्रह्मानंद स्वामी न सिर्फ बाह्य दृष्टि से सुंदर थे बल्कि आंतरिक दृष्टि से भी उतने ही सुंदर !

3.1.7.2 आंतरिक व्यक्तित्व:

ब्रह्मानंद स्वामी का बाह्य व्यक्तित्व जिनाना मनमोहक एवं आकर्षक था, आंतरिक व्यक्तित्व उतना ही हृदयस्पर्शी एवं बंदनीय था। विनय एवं विवेक से भरे शब्द जब वे उच्चरित करते तब वैरागी, ज्ञानी, बाबा, जैन, ज़ितौं फककी सभी दंग रहजाते थे। और ब्रह्मानंद के ब्रह्म वचन के दिखाने ही जाते थे।

श्री नवीनदान रत्नु ब्रह्मानंद स्वामी का आंतरिक वर्णन करते हुए लिखते हैं - “उन का व्यक्तित्व अत्यंत प्रशंसनीय था। वे अनेक गुणों के भण्डार थे। जैसे - महाधर्म शील, निर्माणी, निर्व्यसनी, महतेजस्वी आकृतिवाले, बाल ब्रह्मचारी, सुमधुर कण्ठ एवं गांधर्व की तरह सच्चे चारण देव थे। सत्यवक्ता, उत्तम राजनीतिज्ञ एवं देवीय गुणों से निर्मल आत्मावाले थे। (२७) ब्रह्मानंद स्वामी के ऐसे अनोखे व्यक्तित्व की कुछ झलक उनके जीवन के महत्त्व पूर्ण प्रसंगों को उदाहरण रूप में देखें।

3.1.7.3 दीक्षा के बाद का व्यक्तित्व:

लाजुङ्गनजी का जेसियों मजबूत एवं गढ़ीले शरीर की अपनी अलग ही प्रतिभा रही है, साथ ही उनका आंतरिक व्यक्तित्व भी प्रशंसनीय था। दीक्षा के पश्चात का व्यक्तित्व जितना प्रभावशाली था। दीक्षा के पश्चात का व्यक्तित्व भी उतना ही सराहनीय था। श्री नवीनदानजी रत्नु (२८) “शिखा सूर्य, भगवे वर्गों में ब्रह्मानंद स्वामी का देवांशी भव्य चेहरा चंद्र से अधिक चमक रहा था। कोई पूर्व योगी दीक्षा के बाद ब्रह्मानंद स्वामी लग रहे थे।
ब्रह्मांनद स्वामी की भव्य, मनोहर देहाकृति, वाक्यावृत्ति, काव्यकला कौशल और अदभुत आकर्षक मनोहर मुखाकृति में साक्षात् ब्रह्मूर्ति दिखते थे ।

ब्रह्मांनद स्वामी का समग्र व्यक्तित्व ही ऐसा था कि उनके सैन्दर्भ को देखकर छोटा बड़ा हर कोई दंग रह जाते । ब्रह्मांनद स्वामी सदनुग्रहों के भण्डार थे । सुंदर, लंबा चौज एवं मजबूत शरीर मारवाहै, शूरवीर, स्वभाव से वाचाल एवं हसमुख थे । बुद्धिमान एवं समयोचित हाजर जवाबी थे । गंगा के प्रवाह जैसी अस्थिरता बाँधी कार्य-कृशल, निपुण, राजनीतिज्ञ, विद्वान, विवेकी और सुव्यवस्थित व्यवहार, शिश्न कविश्वर, संस्कृत की जगत में प्रखर अभ्यास, अनेक भाषा के जानकार, एवं कवि तथा रचनाकार, शिक्षाविद एवं सहस्वाध्यानी सर्वसाधारण निष्ठ थे । वे दिल से दयालु और मन से उदार थे । सत्य एवं स्पष्ट वक्त भी थे । वे प्रभावशाली थे । उनकी मुखाकृति ही अत्यधिक तेजस्वी थी कि देखनेवाले को सहजभाव से गुरुभाव उत्पन्न हो जाता था ।

ब्रह्मांनद स्वामी अखंड नैच्छिक प्रतिवर्तन करनेवाले बलब्रह्मचारी, वचन सिद्ध महान योगीराज थे । धर्मसमाधी, कुलाधिकारी एवं छोटे नियमपालक थे । उनकी प्रकृति मिलनसार एवं आनंददायिनी थी । वे सदैव ही ब्रह्मांनद के मिश्रन रहनेवाले अलमस्त योगी थे । इतना ही नहीं श्रीजी में सच्चाई रखनेवाले ब्रह्मांनद स्वामी रत्न से स्तम्भ, क्षमा की साक्षत् मूर्ति थे । उनमें विद्वान, विनाशक के त्रिवेणी बहती थी ।

ब्रह्मांनद स्वामी के व्यक्तित्व की ऐसी अनगिनत विशेषताएँ संप्रदाय के ग्रंथों में कठिनाई फैलनों में भरी पड़ी हैं ।

3.1.8 ब्रह्मांनद स्वामी के जीवन प्रसंग :

3.1.8.1 चमत्कारिक प्रसंग :

स्वामिनारायण संप्रदाय में ब्रह्मांनद स्वामी को एक युग पुरुष के रूप में स्वीकारा गया है । उनके पूर्व जीवन से ऐसी-ऐसी चमत्कारिक घटनाएँ घटती रहती हैं कि उन घटनाओं को देखकर कोई भी आम आदमी उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता ।
ब्रह्मानंद स्वामी साधारण पुरुष नहीं थे। उनकी असाधारणता तो जन्म के पूर्व से ही प्रकट हो गई थी। ऐसे कुछ प्रसंग हमारे सामने हैं, जो जन्मशृंखला एवं संप्रदाय के साहित्य से सामने आये हैं। यही लालुदान को श्रीरंग से ब्रह्मानंद बनाते हैं। ऐसे कई चुनिन्दा प्रसंग हैं, जो यहाँ उल्लेखनीय हैं।

जन्मशृंखला के अनुसार ब्रह्मानंद स्वामी के जन्म से पूर्व ही लालुदान की गर्भवत्ता के दौरान गुरु श्री रामानंद स्वामी खाण गाँव में आये थे। एक दिन गाँव में सभा का आयोजन हुआ था। माता लालुदान की आँख लग गई। कि गर्भ से लालुदान बोले – ‘‘हे स्वामी प्रकट पुरुषोत्तम के महिमा की बातें करें।’’ प्रत्युत्तर में रामानंद स्वामी ने कहा ‘‘महापुरुष प्रकट श्रीहरि के महिमा की बातें तुम्ही करोगे।’’ (२९) इस घटना के बाद ब्रह्मानंद स्वामी के जन्म समय उत्पन्न अद्भुत वातावरण से उस बच्चे को देवी अंश स्वीकार लिया था। अतः, उसके दर्शन के लिए लोगों की भीड़ चहुँ ओर से ऊपर लगी।

जन्म-पश्चात् माता जी लालुबाई के साथ लालु नन्हाल ‘‘भाग्यी’’ (३०) अपने मामा के घर गये तो उनके आगमन के साथ ही गाँव भर के लोग ने खुद धन्यता महसूस की। मामा के घर के पीछे की दीवार के बौछार पर झूला बाँधकर सोते थे। एक दिन अचानक ही दिनांक में नगाढ़े बजने लगे। पूरे गाँव बालों ने यह आवाज़ सुनी। साथ ही साथ आकाश से पुष्पवृक्ष भी होने लगी। यह दश्य सभी ने अपनी आँखों से देखा।

दूसरा, एक प्रसंग यह है कि बचपन में लालु के आगमन से मामा का घर समृद्धि से भर गया। यहाँ तक कि लालुदान के आने से स्वयं गंगाजी सात दिन तक मामा के खेत के कूप में प्रेग्नेंट हुई। इतना ही नहीं घर में जो कुछ रसोई पकाई जाती वह शाम तक खत्म नहीं होती। यह बात आसपास के गाँवों में फैल गई। अतः, आस–पास के गाँव बाले श्रममुदानजी के मेहमान बन ने लगे। बिना आमंत्रण ही मेहमान बनकर पड़ गए लोगों ने यह चमकाया अपनी आँखों से देखा। अतः, उसे यह विश्वास हो गया कि यह लालुदानजी का ही चमकार है। परिणाम स्वरूप गाँव में मांगलिक प्रसंगों पर लोग अपने घर लालुदानजी को बुलाने लगे। लोग जयजयकर भी करते।
आस–पास के प्रदेशों में लालुदानजी का कीर्तिमान होने लगे।
भ्रान्नांद स्वामी के जीवन का अलेक्क कर दर्शन मामा श्री अमरदानजी को हुआ। वे सामुद्रिक शास्त्र के ज्ञात थे। अतः लालूडान के हाथ में पंचकूडिंड और पैरों में उद्धरिया के साथ स्वर्णिक चित्र देखकर भानजे ने अवतारी विभूति होने की अनुभूति प्राप्त की थी।

लालूडानजी का बचपन चमत्कारों से भरा पड़ा था। इस बात से यह सिद्ध होता है कि भ्रान्नांद स्वामी कोई साधारण पुरुष नहीं थे।

जैसे जैसे लालूडानजी बड़े होने लगे चमत्कारों ने अपनी परंपरा चालू रखी। तेजस्वी प्रतिभा के धरी इस बालक ने कुमारवस्था में कदम रखे। समग्र जीवन के दैर्घ्य अनेक शक्तियों का प्रदर्शन कर चुके थे। इस असाधारण बालक को आपे अभ्यास हेतु कष्ट पूर्णशालात्म हां जाने की बातचीत चल रही थी कि एक दिन लालूडान एवं माता-पिता को एक साथ स्वाम आया। स्वान् में देवीय आदेश प्राप्त हुआ "'थोड़े दिनों में कष्टी भ्रान्न सुधार से हारे घर आँगे।" आदेश मानकर लालूडान को भूज नगर भेज ने का फर्मान दिया। स्वामन पर भरोसा हो जाए इसलिए स्वान् इशा ने धार पर कम-कम तिलक किया और अदश्य हो गये। पाँच वे ही दिन स्वाम सही हुआ।

हरोज गंगार्यान जाने का कम लालूडानजी ने धम्म्क निवास के दैर्घ्य बनाया था। वहाँ उसे एक योगी मिले, उनके कहाने पर "'खमी" वृक्ष के नीचे प्रभु दर्शन होंगे।" एक मात के बाद निलंकोत्कर्ण प्रभु ने दर्शन दिये और कहा -- अपे एकांकिक मुक्त हों। हमें अधिक समय तक साथ रहना है।" इत्य तत्कार तेज़ पूंज अदश्य हो गया।

खमी वृक्ष के नीचे दिये गये वचन के विषय में शास्त्री साधारण से आदेश नामाजी कीखते हैं "विष. १८६० में प्रभु ने सच किया और भ्रान्नंदजी स्वामी एवं सहजानन्द स्वामी का प्रथम मिलन हुआ।

तत्पश्चात् सहजानंद स्वामी ने दीक्षा प्राप्तकर श्रीरंग से भ्रान्नंद बने और तब भी श्रीजी की आज्ञा से कई चमत्कार किये और जीवन पर्वत्न करते रहे। वे चाहे श्रीजी के साथ मंदिर निर्माण की बात हो या फिर भक्तों के बीच हों।
ब्रह्मानंद स्वामी के जीवन से संबंधित कुछ प्रसिद्ध प्रसंग एवं घटनाएँ यहाँ शास्त्री
हरिकेशवदासजी रचित पुस्तिका से प्रस्तुत–

3.1.9 कवित्व शक्ति का उदय :

तेजस्वी प्रतिभा चतुराई और बहादुरी से बालसखा बूँद में लाजुद्दानजी प्रिय हो गये । जिस
tरह से सूर्योदय का सूर्य अपना तेज धीरे-धीरे विस्तृत करते हैं । ठीक उसी प्रकार बचपन से ही
उसमें विद्वता और कवित्व शक्ति का संचार होता गया । ईश्वर के वरदान समान इस कवित्व
शक्ति उस वक्त प्रदर्शित हुए बिना रह न पाई । हास्य से युक्त पहलियाँ, साखी-दोहों के गान से
अपने मित्रबूँद को विदाले और प्रसन्न करते रहते ।

ब्रह्मानंद स्वामी ने अपने कवित्व शक्ति का, तेजस्वी प्रतिभा का परिचय भी किशोरावस्था
ही से देना प्रारंभ किया था । सात साल की आयु में ही कुलगुरु की पाठशाला में दाखिल हुए ।
वहाँ गुरुगुरू से जो पाठ पढ़ाया गया उसे बिना गलत किये लाजुदानजी उच्चरित करने लगे थे ।

पिताजी के साथ शिशूही एवं उदयपुर के राणा के वहाँ लम्बोट्सव में जाने का अवसर
मिलता रहता था । एक बार अपनी स्वभाविक तीर्थ बुद्धि से नवी हुई कविता एवं छद-दोहों को
गाकर सुनाया । राणाजी इससे अत्यंत प्रसन्न हुए और कच्चे की पींगल शाला की पढ़ाई का पूरा
खच उन्होंने उठाया । इतना ही नहीं लोटकर आने के पश्चात चार गाँव बक्सी में देने का भी वादा
दिया ।

3.1.10 ज्ञानार्जन हेतु भूवं प्रयाण :

लाजुद्दानजी ने शुभ दिन से भूवं की श्री लखपत ब्रजभाषा पाठशाला में विद्याभ्यास का
प्रारंभ किया । प्रधान अध्यापक राज कवि अभयदासजी लाजुदान की तीव्र याद शक्ति से अत्यंत
प्रभावित हुए । भूवं में अभ्यास १२० दिन लाजुदानजी ने ‘वातार चरित्र’ प्रवीण सागर’ जैसे पिंगल
शास्त्रों के अनेक ग्रंथों में निपुणता प्राप्त करली । अपनी विशिष्ट स्मरण शक्ति के कारण
अश्वाध्यान, शताध्यान, सहस्त्राध्यान जैसी सिद्धि प्राप्त की । भूवं के महाराज ने राजकविवर्तन,
पिंगल विद्याध्याय, सहस्त्रवाचार्य, महामहोपाध्याय, शीघ्र कविवक्त्र जैसी पदवी प्राप्त की ।

1171
इतना ही नहीं लाखनजी जब ‘अमृत ध्वनि’ ‘रेणुकी’ और ‘चर्ची’ छंद का गान करते
तब भूज शहर की प्रजा रात्रि के समय भी सुनने दे आती थी।

3.1.11 काव्य प्रतिष्ठा का आकर्षण:

लाखनजी की काव्य प्रतिष्ठा से शिशोही, उदयपुर, भूज के राजा आकर्षित हुए। हलबद
एवं श्राबंधु राजा महाकवि की काव्य एवं साहित्यक चर्चा से प्रभावित हुए। जयमन्दर के दरबार
में ‘प्रवीण सागर’ ग्रंथ की चर्चा से उपस्थित सर्वे मुथु हुए। जुन्गराज के नवाब हामीदखानजी
लाखनजी की काव्य शक्ति से अत्यंत खुश हुए। भावनगर के वंजेसिंह इसने खुश हुए कि राजुला
से सुनार बुलवाकर उससे आभूषण बनवाकर भेंट दिये। इस प्रकार उनको सम्मानित किया।

3.1.12 मुनिबाबा को सत्संगी बनाया:

सूरत में एक मुनिबाबा रहते थे, जो वेद-वेदांत के विद्वत थे। सभी जाति के लोगों में
मुनिबाबा प्रसिद्ध थे। यथा तक कि उनको भगवान ही माना जाता था। मुनिबाबा के मात्र में हरसोज
समका का आयोजन होता था। इस समका में मुनिबाबा कभी सांप्रदाय की ओर श्रीजी की निंदा भी
करते थे। मुनिबाबा में सत्संग का गुण उत्पन्न हो ऐसी कला ब्रह्मानंद रावणी के पास थी।
अत: सहहानंद रावणी ने वेदांत की पद्वाई के बहाने ब्रह्मानंद रावणी को सूरत भेजा।

ब्रह्मानंद रावणी मुनिबाबा से मिले, परिचय हुआ और मुनिबाबा से विशेष अभ्यास की
इच्छा व्यक्त की। मुनिबाबा ने हाँ भरी। दूसरे दिन से मुनिबाबा से ब्रह्मानंद रावणी ने कौमुदी,
काव्य और न्याय के पाठ पढ़ना शुरू किया। सारे पाठ दूसरे ही दिन ब्रह्मानंद रावणी को कंठस्थ
हो जाते थे।

ऐसी विशाल बुद्धि, तर्कशक्ति, कविता, हास्यसमर स्वभाव, शीघ्र उत्तर देना, शीघ्र
कविता, संगीत कला आदि विशेषताओं से मुनिबाबा का परिचय होने पर ब्रह्मानंद रावणी से प्रीति
बढ़ने लगी। धीरे-धीरे मुनिबाबा ब्रह्मानंद रावणी को बड़े प्रेम से पढ़ने लगे। ब्रह्मानंद रावणी से
यह स्नेह गाढ़ होता गया। प्रसंगोचित सांप्रदाय एवं स्वामिनारायण भगवान की चर्चा होती। ऐसे
समय प्रभाषण देकर ब्रह्मानंद रावणी ने पृथ्वी पर प्रगट प्रभु की बात कही। इस बात से मुनिबाबा
को श्रीहरि से प्रेम जागृत हुआ और मिलन की उत्कंठा जागृत हुई।

१७८
ब्रह्मानंद स्वामी के साथ मुनिबाबा गद्दपुर आये । नीम वृक्ष के नीचे सभा में मुनिबाबाने स्वामिनिरायण भगवान के दर्शन किये । सासंग प्रणाम किया । आठ दिन के समागम के बाद मुनिबाबा का हंद महाराज से मुनिबाबा ने प्रार्थना की कि- ‘‘मुझे परमहंस बनाओ।’’ तब प्रभुने उन्हें उसी रूप में सत्संग करने को कहा ।

इस प्रकार ब्रह्मानंद स्वामी ने मुनिबाबा जैसे महाधिपति को सत्संगी बनाया ।

3.1.13 निपूणी ब्रह्मुद्ध :

बड़िल मंदिर निर्माण के बाद मूर्ति प्रतिष्ठा के लिए महाराज पढारे । सत्संगियों ने मिलकर प्रभु का पूजन अर्चन किया । इस में पवित्र हजार रूपए का खर्च हुआ । अतः महाराज बोले कि ब्रह्मानंद स्वामी अधिक बड़े हैं । इस प्रकार उनकी प्रशंसा की । किसी ने कहा कि- इस देश में सभी उनको देखते हैं और सभी जगह ब्रह्मानंद स्वामी ब्रह्मानंद स्वामी ही हो रहा है । अतः इसे अपने पास रखा और दूसरे को यहाँ रखने । तब महाराज बोले - ‘स्वामी ! तुम यहाँ कारखाने में रहते हो । अतः हमारे काय्य कीर्तन बंध हो गये हैं । तुम्हें तो जीवनपर्यंत काय्य कीर्तन ही करने हैं । ब्रह्मानंद स्वामी ने कहा कि- ‘‘महाराज! मेरी भी यही इच्छा है । आपके पास रहकर आपके पर हरिभक्तों के गुण गाते रहें । मंदिर निर्माण का कार्य तो आपकी आज्ञा से ही करते हैं । बाद में वे महाराज के कहने पर उनके साथ ही चले । तब ब्रह्मानंद स्वामी ने एक कीर्तन बनाया -

अथम उदारण अविनाशी तारा, बिरुद्धी बलिहारी रे ।
भरी सभामां मुघरजी तमे, मादि थ्या छो मारी रे ।

3.1.14 वृक्षों का कल्याण:

घर या मंदिर निर्माण में थोड़ा बहुत जीव हिंसा होती है । ब्रह्मानंद स्वामी हाथ जोड़कर बोलते हैं - ‘‘हे महाराज! मंदिर निर्माण में हरे वृक्ष कट गये हैं और चूने की भग्नावशेष भी बनाई गई हैं।’’ ब्रह्मानंद स्वामी की दया भावना देखकर महाराज कहते हैं - वे सभी जीव सत्संग में जन्म धारण करें । ब्रह्मानंद स्वामी की भी यही इच्छा थी ।

१७९
3.1.15 ब्रह्मामुनि भगवानः

श्रीजी भगवान अंतर्यामी थे। एक बार कहा यात्रा दौड़ते उन्होंने स्वामी को कहा -

"ब्रह्मामुनि! ब्रह्मामुनि! आप मेरे आसन पर बैठें। मैं उस स्थान पर कमली रखकर बैठता हूँ, क्योंकि खेती वेदांती स्थविर्द्धा के अभिमान से यहाँ प्रशोधकर करने हेतु आ रहे हैं। वे आकर तुम्हें सहजानंद मानकर प्रश्न फूसेंगे। उस समय मेरी ओर अँगूली बलकर ये उत्तर देंगे ऐसा कहना ब्रह्मान्द स्वामी ने प्रभु से प्रार्थना करते हुए कहा कि ‘महाराज आपके होते में आपके आसन पर कैसे बैठूँ। मुझे पाप लगेगा।’ तब श्रीजी महाराज ने कहा कि - ‘स्वामी हमारे वचन से बैठो। यह मुरु आजा है इस में दोष नहीं लगेगा। यह सुनकर ब्रह्मान्द स्वामी ने कहा कि ‘ठीक महाराज! मैं भी दो घड़ी भगवान की गदी की लाम ले लेता हूँ। ऐसा कहकर वे उच्चासन बैठे। महाराज की आज्ञा से संतों ने ब्रह्मान्द स्वामी की चंदन से अर्चना की, फूललाहर पहनाए। ब्रह्मान्द स्वामी की महाकदाव पूजा काया, क्षेत्र आरा समान सुशोभित गैर वर्ण, प्रभावशाली मुखरविन, मानव चतुर्कर्षक दिव्य दृष्टिवाले ब्रह्मान्द स्वामी सभा में भगवान समान ही शोभायमान थे।

ऐसे में खेती वेदांती अपने शिष्य मंडल के साथ कुछ श्रुंति बोलते हुए आए और उच्चासन के पास आकर बैठे - सहजानंद स्वामी हो? ’ स्वामीने कहा - ‘तुम्हें जो पुजना है मुझसे पूछो।’ उस वेदांती रविवर ने कहा - मैं वेदांत आचार्य हूँ, और मुझे वेदांत के प्रभ्यों की चर्चा करनी है। तब ब्रह्मान्द स्वामी ने कहा - ‘ऐसे प्रभ्यों का उत्तर तो सभा में बैठे हमारे छोटे साथू देंगे। ऐसा उत्तर में क्यों दूः अत: आप खुशी से प्रभ्य पूछ कर जो चर्चा करनी है, सो करिए।’ ऐसा कहकर उन्होंने श्रीजी महाराज के सामने अँगूली निदर्शन किया।

बाद में उस खेती को विश्वास हुआ कि उत्तर देनेवाला ही भगवान है।

3.1.16 क्षमामूर्ति ब्रह्मान्द स्वामीः

एकबार झालावाह देश में सतसंग विचरण करते हुए ब्रह्मान्द स्वामी किसी गाँव से आ रहे थे। रास्ते में एक व्यक्ति तलवार के साथ सामने आया। उससे सभी साथु को रोक कर लूटने के लिए सबकी पूजा को छोड़कर लूटने लगे। तब स्वामी ने कहा - भाई, तुम्हें तो चोरी करना भी नहीं आता। तेस्री तलवार तू अपने पास रखकर चोरी कर; नहीं तो हमारे इन चालूस में से किसी
को शूरुवार आ गई तो हमारा साधु धर्म जाएगा और तुम-हारा शीश ! ऐसे क्षमामूर्ति संत कहाँ मिलेंगे !

3.1.17 स्वामी की आयुवृद्धि :

एकबार ब्रह्मानंद स्वामी गढ़पुर में बीमार हुए। वे स्वस्थ नहीं हो रहे थे। दरबार में एक ही चर्चा चली कि स्वामी स्वस्थ क्यों नहीं हो रहे हैं?

जीवुबा-लाजुबा ने महाराज से पूछा – 'महाराज ! ब्रह्मानंद स्वामी कैसे हैं?' श्री हरि सभा में बोले कि – 'बहनो ! स्वामी आज या कल अक्षरधाम पदार्पणे। बहनों ने प्रार्थना की – 'हे महाराज ! अभी सरस्वती में ब्रह्मानंद स्वामी की अधिक जरूरत है। अतः कृपा कर उन्हें स्वस्थ कीजिए।

रामायाण एकपेक्षा वटबें तदुपनस्थिताः।

तत्प्रायः पश्यत: स्वं स्वं यावधावान्मूष्य च।

हरि बोले स्वामी को स्वस्थ करने का एक ही उपाय है, स्वामी की आयुवृद्धि पूर्ण हो गई है। बहनों कहा, तो महाराज ! हमारी आयुवृद्धि स्वीकर करें, पर ब्रह्मुमनि को स्वस्थ करें। श्रीजी महाराज ने तथास्तु कहा और ब्रह्मानंद स्वामी स्वस्थ हुए। स्वामी बीमार हुए तब श्रीहरि हररोज स्वामी की तब्बियत का ख्याल करते थे। स्वामी अस्वस्थ होते हुए भी ब्रह्मानंद स्वामी दो कीर्तन बोलते थे। कीर्तन सुनकर महाराज अत्यंत खुश होते थे।

स्वामी स्वस्थ हुए उसी रात्रिको स्वामी के पास नारदजी पधारे और हाथ जोड़कर कहा कि हे स्वामी ! आपके बनाए कीर्तन में अपनी वीणा में गाता हूँ। उसे सुनकर कितने ही देव श्री पुरुषोत्तम के धाम में जाते हैं। भगवानने तुम्हें स्वस्थता प्रदान की है, तो अब भी श्री हरि की मूर्ति के कीर्तन बनाओ ऐसी मेरी नम्र प्रार्थना है। ऐसा कहकर स्वामी के तथा श्री हरि के चरणों के दर्शन कर नारदजी अद्वैत हो गये।

3.1.18 गैलोक में स्वामी की कीर्तन:

श्रीजी महाराज ने वचनामूलीम (36) में इस बात का उल्लेख किया है। `हम आज रात्रि में स्वप्न में गोलक गये, वहाँ भगवान के अनंत पार्श्व देखे। उन में से कितने तो भगवान की सेवा में
रहे हैं, वे तो स्थिर दिखाई दिये और किने तो पसंदेशक के कीर्तन गाते हैं । ये भी मुक्तानंद स्वामी और ब्रह्मानंद स्वामी के किरन गाते हैं और कीर्तन गान के साथ खेलने भी लगते हैं । जैसे नशा करके पागल बनकर खेलते और गाते हैं, वैसे ही कीर्तन गाते और खेलते हैं । हम भी उनके साथ मिलकर कीर्तन गाने लगे ।”

3.1.19 सत्संग की माँ :

स्वामिनारायण भगवान के हरि भवतों में जेलतपुर के गरीब ब्रह्माण जीवन भगत भी थे । प्रभु को क्या भोग लगाये ! पति-पत्नी दोनों चितित थे । पत्नी ने घर में पड़े मठ की रोटी बनाकर दी और कहा- भगवान भाव के भूखें हैं, जो देते हैं - हम खाते हैं, वही उन्हें भी देंगे ।

पत्नी द्वारा बनाई गई मठ की दो रोटियाँ लेकर जीवन भगत संकोचित मन से एक कोने में जा खड़े हो गए । स्वामिनारायण भगवानन ने हाथ पसार कर जीवन भगत के पास से रोटी लेती । बौँ हाथ में रोटी और बौँ हाथ से प्रभु प्रेम से रोटी आरोगने लगे ।

भक्त्यासुलता वियमयुग करोट को है ।

भक्तोन तेन भगवानिति त्रृसिमाप ।

मानो अमृत का पान करते हों । उसी प्रेम से मठ की रोटी खाने लगे । ब्रह्मानंद स्वामी ने कहा - "महाराज ! खाने को सवाद, सो तो और को खिलाईए।" यदि सब के बीच तारीफ करनी हो तो सभी को देना चाहिए । यही नीति है, वरनू छीप कर कोने में खा लेना चाहिए ।

प्रभुने मना कर दिया । इसमें से एक टुकड़ा भी नहीं मिलेगा । ब्रह्मानंद स्वामी ने सोचा कि प्रेम में पूरी रोटी खा जाएँगे तो पेट में दर्द होगा अत: साहस कर प्रभु हाथ से खेड़ रोटी ले ली ।

"अरे रे, ये क्या किया ?" - "प्रभु इतना बहुत हो गया।"

ब्रह्मानंद स्वामी संत सभा में बैठ गए । संतगण प्रसाद लेने आए, तब ब्रह्मानंद स्वामी ने कहा, "यह मेरे अंतों का है । अतः इस प्रसाद पर किसी का भी अधिकार नहीं है ।" तब मुक्तानंद स्वामी ने कहा - संतों ! शांति रखिए । ब्रह्मानंद स्वामी तो 'सत्संग की माँ' हैं । बच्चे को दिए बिना माँ कभी खाती है ? तब ब्रह्मानंद स्वामी ने सभी संतों में प्रसाद बाँटा । ब्रह्मानंद
स्वामी की चतुराई से सभी संत, हरिभक्तों को प्रसाद मिला और जीवन भगत को परम आनंद प्राप्त हुआ।

3.1.20 कल्याणकारी ब्रह्मांद स्वामी:

ब्रह्मांद स्वामी सहजांद स्वामी के प्रिय संबंध में से एक थे। ब्रह्मांद स्वामी ने सहजांद स्वामी की कुप्पा से कई चमत्कार भी किए हैं। इन चमत्कारों से भक्तों का प्रभु से प्रेम एवं विश्वास प्रगट बनता है। कल्याणकारी ब्रह्मांद स्वामी के विशेष व्यविकल्प और प्रतिभा से वे संतों एवं भक्तों की सहायता करते रहे हैं। और कल्याण की भावना एवं चतुराई से सबका कल्याण किया करते हैं।

3.1.21 दर्शन का प्रतिबंध हटाया:

गढ़पुर में सहजांद स्वामी ने एकांतवास किया और संतों को आज्ञा दी कि प्रभु की आज्ञा के बिना कोई दर्शनार्थ न आए। परेरण संत ब्रह्मांद स्वामी के पास पद्धारों और कहा – महाराज कहें तो उपवास करें। महाराज कहें तो रेत खाएँ। जब दर्शन हो ऐसा उपाय बताई।

ब्रह्मांद स्वामी ने प्रयास किया। किसान का बेटा खेत में नानी दे रहा था। ब्रह्मांद स्वामी ने उस खेत देते हुए कहा – भाई, यह खेत दादा खाचर के दरबार में स्वामिनारायण भगवान को दे आ। लड़के ने कहा – यदि में खेत देने गया तो नानी कौन देगा?

ब्रह्मांद स्वामी ने खेत में नानी दिया। वह लड़का खेत लेकर दरबार में गया। यह बात सत्संग में अत्यंत प्रचलित है –

सुनो चतुर सुजान ऐसे न घटे रे,
																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																																							
tamn ne ainaabhji,
maa prann na áadháar, jem rakhó tém rahiè včnn ne sáthjí!
ámé lok lāj kulam ni lomí, ámे tám kārṇ páhери tómpí,
ámé gürauñá kāyám gorpi, súno chtur ú (37/9)

(हे दीनानाथ प्रभु ! हमारे प्राणों के आधार, जिस प्रकार तुम रखो, वचनानुसार हम रहेंगे। आपके खातिर हमने लोक लाज एवं परिकर का त्याग किया। हे चतुर प्रभु सुनो।)
ब्रह्मानंद स्वामी के शब्दों में दीनता का भाव है, हठाग्रह नहीं हैं । कीर्तन (खत) पढ़कर महाराजा ने उस लड़के को कहा कि, स्वामीजी को यहाँ भेजो । बच्चे ने स्वामी को यह समाचार दिये तब ब्रह्मानंद स्वामीने सब संतों से कहा, ‘दयालु ने दया की । ब्रह्मानंद स्वामी की ऐसी चटुराई ने सभी संतों को दर्शन सुख दिलाया।

इसी प्रकार ब्रह्मानंद स्वामी ने संतों को सरकार, कंतन के वस्त्र आदि करों से मुक्त कराया जिससे स्पष्ट होता है कि ब्रह्मानंद स्वामी ओर श्रीहरि के बीच इतनी निकटता थी कि प्रेम से जो विनती करते हैं, सहजानंद स्वामी स्वीकार कर लेते हैं।

‘श्री हरि लीला कमल भारकर’ में कवि भीम भक्त ब्रह्मानंद स्वामी के लिए लिखते हैं –

“अति भारे ब्रह्मानंद मुनि, ए छे बहाली विभूति प्रमुःणी,
अति प्रेम नियमां पूरा, इन्द्रीयजीत अतिशय शूरा,
दिल चाद विद्या गुण गाण, कवीर्वर मोटेरा प्रमाण,
सूर्य तुल्य कवीर्वर सारा, बीजा कविओने मानजो तारा,
प्रेम लक्षणा भवितमां पूरा, पिंगल विद्या विख्यान शूरा,
सखा श्री घनश्यामना सोय, ब्रह्मानंद मुनि मन जोय।”

3.1.22 ब्रह्मानंद स्वामी के ईश्वरीय चमत्कारः

एकबार मूली में स्वामाई ने ब्रह्मानंद स्वामी से प्रार्थना की कि स्वामी ! हमारे रामाभाई के यहाँ पुत्र नहीं हैं। ब्रह्मानंद स्वामी ने आशीर्वाद दिये कि – उसके यहाँ दो पुत्र होंगे। ब्रह्मानंद स्वामी के आशीर्वाद से रामाभाई के यहाँ दो पुत्रों का जन्म हुआ। वक्तचितं और सरतानसिंह पुत्रों के नाम थे, जिसमें वक्तचितं रघु राजा के अवतार माना जाता है।

मूली मंदिर निर्माण के समय हनुमानजी और गणपति की मूर्ति बनाने हेतु पत्‌थर की खुदान से बड़े पत्थर बैल गाड़ी में चढ़ाए जा रहे थे। ये पत्थर इतने भारी और बड़े थे कि ऊपर चढ़ाए ही नहीं जा रहे थे। कारीगर व्यक्तु थे। उस समय ब्रह्मानंद स्वामी ने कहा कि यदि देव बनकर फूजनीय बनना हो तो बैल गाड़ी में बैठ जाओ! ऐसा कहते हुए ब्रह्मानंद स्वामी ने पत्थर का स्पर्श किया और पत्थर फूल के समान हल के हो गए।

१८४
मूली में गिरासोदार इक़त्रित होकर ब्रह्मानंद स्वामी से कहने लगे - स्वामी! बरसात के
बिना मोल (अनन) सूक (सुख) रहा है। ब्रह्मानंद स्वामी ने सरोद के तार चढ़ाकर मल्हार राग
छः छड़ा। देखते ही देखते बारिश ऐसी हुई कि भोगावा नदी में बाढ़ आई!

इसी प्रकार गढ़पुर में भी श्री हरि की आज़ा से ब्रह्मानंद स्वामी ने मल्हार राग छः छड़कर
बरसात बरसाई थी। इस प्रकार ब्रह्मानंद स्वामी अपनी कला, कौशल और देवत्व से संतों एवं
भक्तों के दृःख दूर करते थे।

गढ़पुर के वाणिज्य राजा शेष को ब्रह्मानंद स्वामी से विशेष स्नेह था। एक बार वह बहुत
बीमार हुए, उसे चार यमदूत लेने आए। तो हुए उस वाणिज्य ने एक बार ब्रह्मानंद स्वामी को याद
किया। तुरंत ही ब्रह्मानंद स्वामी के दर्शन हुए। ब्रह्मानंद स्वामी को देखकर यमदूत वेग से भागे।
उस समय एक यमदूत उड़ से टकराया। पूरा उड़ धड़के साथ नीचे पड़ा। थोड़ी देर बाद हेमा शेष
जागृत हुए। बाद में अपने घर ब्रह्मानंद स्वामी तथा श्रीजी महाराज को भोजन हेतु बुलाया। अब तो
आपकी आर्थ रामीजी की शरण में ही हूँ। यमदूतों को मेरे पास आने मत देना। मेरा अपराध
माफ कीजिए। केवल दर्शन से ही यम के दृःख भाग गए। ऐसे समय थे ब्रह्मानंद स्वामी।

मूली मंदिर निर्माण के समय बढ़वाण में कोलेरा के कारण लोग टपटप मर रहे थे। मोना
सलाम के नीचे २५ लोग काम करते थे। किसी ने कहा कि तुम्हारी बीमी और पुत्र को भयंकर
कोलेरा हुआ है। मोना भक्त ने कहा भले मर जाएं, मैं नहीं जाएं। ब्रह्मानंद स्वामी ने कहा कि
जाना चाहिए। तब भक्त ने कहा कि जीवित रहना या मारना श्री हरि के हाथ है।

ब्रह्मानंद स्वामी ने ध्यानावस्था में माता-पुत्र को मृत देखा। अंतः दृष्टि से श्री हरि से बात
कर दोनों को सजीव किया। वढ़वाण में मरनेवालों को बचाने हेतु ब्रह्मानंद स्वामी को बुलाया
और गाँव के प्रवेशद्वार पर पानी छिड़काव से लोगों की मृत्यु होती बच गई।

इस प्रकार ब्रह्मानंद स्वामी ने श्री हरि से मिलकर कई चमत्कार किए हैं। ये चमत्कार
लोक हिताय, भक्त रक्षार्थ थे।

९८५
3.1.23 वचन सिद्ध ब्रह्मांदन स्वामीः

ब्रह्मांदन स्वामी वचन सिद्ध थे। मूली मंदिर निर्माण के समय वहाँ के राजगिर्व ने काम करने से इनकार कर दिया। ब्रह्मांदन स्वामी ने कहा कि तिन्ता मत करना। कोलेसा को गाँव में ही नहीं आये बूंगा। उस समय ब्रह्मांदन स्वामी ने ‘‘स्वामिनारायण’’ महामंत्र का उच्चारण करके कोलेसा को गाँव से बाहर निकाल दिया। ऐसे असंख्य चमत्कार ब्रह्मांदन स्वामी ने मूली में दिखाए हैं।

मंदिर में सेवा करनेवाले किसने ही हरि भक्तों एवं राजा को, ‘‘तुम्हारे कुल में जिसकी भी मृत्यु होगी उसे ठाम में ले जाएँगे। ऐसे वर्दन दिए हैं और दस वर्षों में भी तैयार न हो सके ऐसा मंदिर केवल खेड़ साल में ब्रह्मांदन स्वामी ने कर दिखाया था।

3.1.24 श्री हरि के सख़ा

निराले व्यवित्तवाले ब्रह्मांदन स्वामी मोहक एवं आकर्षक प्रतिभावाले थे। आनंदी स्वभाव ऐसा कि उन से दूर जाने का मन ही न हो। आनंदी, दसमुख एवं समय सूचकता के स्वभाव के कई उदाहरण संप्रदाय के ग्रंथों में एवं सत्संगियों के पास से मिलने। ऐसे स्वभाव के कारण ही श्रीजी महाराज से ब्रह्मांदन स्वामी का सखाभाव था। सहजानंद स्वामी जब ब्रह्मांदन स्वामी से हास्य-विनोद करते तब श्री हरि चाहे गमगीन, उदास या उग्र हो ब्रह्मांदन स्वामी उन्हें हेंसाते-प्रसन्न कर देते।

कई कीतन्त ऐसे हैं जिसमें यह भाव उभर उठे हैं –

‘‘ब्रह्मांदन बाल स्नेहीख, राखुं जोर करी नहिंन ४३ जावा।’’(३७/३)

(बाल स्नेही ब्रह्मांदन तुम्हें अपने पास ही सख्ता, कहीं जाने नहीं दूंगा)

इस कीतन्त से लक्ष्य होता है कि स्वामी श्रीहरि के बाल-स्नेही, बाल-सखा थे। सखाभाव होता है वही प्रभु की उदासीनता को दूर कर सकता है। श्रीहरि सहजानंद स्वामी एवं ब्रह्मांदन स्वामी में अलोकित सखाभाव था। जब सहजानंद स्वामी उदास होते थे, तब अपनी चटुराई से प्रभु को हेंसाते का कार्य ब्रह्मांदन स्वामी ही करते थे।

१८६
3.1.25 गुणों के सार ब्रह्मानंद स्वामीः

ब्रह्मानंद स्वामी का व्यक्तित्व कोई साधारण व्यक्तित्व नहीं था । एक अलग-अलग व्यक्तित्व के धारी थे ब्रह्मानंद स्वामी । ब्रह्मानंद स्वामी में गुणों की भरमार थी । इन्हें गुणों के कारण ब्रह्मानंद स्वामी सहजानंद स्वामी के संबंध एवं संप्रदाय के उद्देश्य रहे हैं ।

3.1.26 कलाओं में पारंपरितः

जन्म से ही असाधारण व्यक्तित्व धारण करनेवाले ब्रह्मानंद स्वामी ने चरण से ही अपनी काय्य कला की प्रतिभा के सबको प्रभावित किया था । कवि को इस विशेषता का आगे आलोचनात्मक दृष्टि से निरूपण किया जाएगा ।

काय्य कला के अलावा ब्रह्मानंद स्वामी ज्योतिषविद्वान, सारस्वतकाण्डकार, संगीतशास्त्र, अनुक्रमशास्त्र, नायक-नायिका भेद, खगोलशास्त्र, आरोग्यशास्त्र एवं शिल्पकला में तो पारंपरित थे ही । पर इससे भी आगे चलकर देखें तो जिन चौसल कलाओं को सादिकी ऋषि से श्रीकृष्ण सीखे थे । इससे प्रभावित होकर अपने गुरु श्री भद्राचार्यजी से उपयोगी 28 कलाओं को गुरूमुख से सिद्ध किया था । इन कलाओं में गीत, वाद्य, नृत्य, नाट्य-कला, उदचवाद(1) तैना, हस्तलाभव, पाकशास्त्र कला, पहेलिका,(2) प्रतिमाला(3) वाचनकला(4) नाटकशास्त्रिय दर्शन, काय्य समस्या पूर्ति, तर्कवाद, रथकालकला, शिल्पकला, रूपरत्न परीक्षा(5) अक्षर-मुनिका कथन(6), शुकनकला, आ संवाच्य नामसी काय्य-अभिधान कोष(7) छंदोज्ञान, सिंहा विकल्प(8)
आकर्षणक्रिया(9)

(1) पानी से भरे पात्रों में तरंग उत्पन्न करना । (2) दूसरे व्यक्ति को बोलना बंद करने हेतु अटपटे प्रभु पूछने की कला (3) शीघ्र उतर-ब्रह्मानंद स्वामी को यहकता संपूर्ण सिद्ध थी (4) प्राचीन ग्रंथों एवं लिपिविचारन (5) स्वर्ण एवं परिक्षण कला (6) दूर बैठा व्यक्ति का लिखा रहा है उसे यह दोष (7) किसी भी पदार्थ के कितने नाम हैं उसे जानना (8) खाद सामग्री में जहर परखने की कला (9) कुस्ती अंग कस्तर आदि ।

इसके उपरांत अपने गुरु से शुकनीति, चाणक्यनीति का भी अध्ययन किया था । स्वातम बुद्धि, अश्वकला जो आत्म-शक्ति से ही सीखी जाती है, यह भी ब्रह्मानंद स्वामी को प्राप्त थी ।

187
सभी कलाओं को प्रारंभ गुरु आदेशनुसार अंतिम श्रेष्ठकला ईश्वरच को प्रास करने की कला प्रासकर ब्रह्मानंद स्वामी ‘कला–निपुण बन गए थे।

3.1.27 शतावधान एवं सहस्त्रावधान:

लाल्हानजी ने अपने विद्या गुरु से दीक्षा प्राप्त कर अपनी शिक्षा एवं विशेषता के आधार पर चरों और यश–कीर्ति फैलने लगी। दरबारों से समाप्त करने की एवं राज कच्चे पद पर बिराजण करने के निमंत्रण और आमंत्रण मिलने लगे। ऐसे में दरबारों से शतावधान एवं सहस्त्रावधान प्रयोगों से राजा एवं राजकीयों की लाभान्वित करने के आमंत्रण भी मिलने लगे।

दीक्षा के बाद भी ब्रह्मानंद स्वामी ने अपने बुद्धि चालु का प्रयोग, शतावधान एवं सहस्त्रावधान प्रयोग से सबको आकर्षित किया।

शतावधान में अलग–अलग कार्यवाही हेतु ऐसे सौ (१००) अध्ययन सहस्त्र (१०००) व्यक्ति अथवा साधनों–वस्तुओं के साथ उपस्थित होते और अपना अपना साप्ताहिक ग्राम कार्य करने। इन कार्यों में गणित, ग्रह, नक्षत्र, सूर्य, चंद्र, गलित, हिसाब, पहलियाँ, मुरारियाँ, काव्य, भजन, पादपूर्विता, चर्चा, सवाल–जवाब, गुजराती, हिंदी, राजस्थानी, मारवाड़ी, मराठी, कच्छी, ब्रज, ऊर्फ़, संस्कृत भाषाओं में नवीन रचना तिथि लेखक का भी लिखते एवं कुशाग्र बुद्धि से आकर्षक प्रयोग ऐसे एक सौ कार्य बिना किसी गलती मात्र एक ही घण्टे में कर दिखाना।

ब्रह्मानंद स्वामी की ऐसी ईश्वरीय शक्ति से सब कोई आकर्षित हो जाते।

ऐसे प्रयोग तो लगभग ब्रह्मानंद स्वामी ने हर एक दरबार में किये थे। पर अंतिम शतावधान प्रयोग(३८) सहजानंद स्वामी के गढ़पुर के दरबार में दिखाकर उपस्थित समुदाय को मुख्त कर दिया था।

3.1.28 खदविधान एवं अष्ठ विधान:

सहजानंद स्वामी के साथ ब्रह्मानंद स्वामी जब सिद्धपुर पालन पढ़ाने तब वहाँ विद्यु विद्या शास्त्र का विद्यमान चल रहा था। आसपास के गाँवों से लोग सुनने के लिए आते थे। पर
सहजानंद स्वामी के आगमन से उस सभा में इनेगिने लोग ही जाने लगे। उस सभा में ब्रह्मानंद स्वामी भी उपदेश की बातें किया करते थे। साथ ही सत्संग का महत्व भी बताते जाते थे।

ऐसे समय मुक्तानंद स्वामी ने ब्रह्मानंद स्वामी की तारीफ करते हुए कहा कि ब्रह्मानंद स्वामी के कारण सत्संगसुपी समंदर में तरंगें बढ़ने लगी। सत्संगसुपी ‘सूर्य’ की किरणें चारों ओर फैली हुई हैं। चन्द्र के समान दिन-प्रतिदिन सत्संगी कला की वृद्धि हो रही है और ‘कमल’ के समान भारत खण्ड में सत्संग की सुवास फैल रही है। इतना ही नहीं वे सविं चतुरसुपी ‘कल्पवृक्ष’ हैं। ये पाँच प्रतीक ब्रह्मानंद स्वामी के लिए प्रयुक्त कर सभा को संबोधित किया।

तब उस सभा में काशी के पंडित चंदीलालजी उर्फ चंद्रमणि शर्मा ने ब्रह्मानंद स्वामी की परिक्षा लेनी चाही। उन्होंने कहा – ‘शतावधान और सहस्रावधान तो तेज बुद्धि एवं समरण शिक्षावाले हरकोई कर सकते हैं, पर काय्यार्थ खदान एवं अभिविधानी काव्य भेद में एक ही शब्द के छ। या आठ प्रकार के जिन विशेषणों का काव्य में गूँदकर लोक भोग्य भाषा में भाषांतर कर सकते हैं। ब्रह्मानंद स्वामी ने कहा – ‘ये बहुत ही कठिन काव्य भेद हैं। आप जैसे विडन ही इसे समझ सकते हैं। पर यदि श्रीजी महाराज की आज्ञा हो तो मैं इस काव्य की रचना करके शाम की सभा में बोल-सुनाएँगा।

सहजानंद स्वामी की आज्ञा से शाम की सभा में अनेकानेक विडनों, पंडितों, भूदेवों की उपस्थिति में ब्रह्मानंद स्वामी ने प्रणाम कर उनकी आज्ञा पाकर राधिकाजी के अंगीकार के छ। प्रकार की उपमा एवं आठ प्रकार के विशेषण देकर खदान एवं अभिविधानी की दो कविताएँ चारण शैली में सुनाई।

(१) खदान-विधानी काव्य (मनहरछंद)

<table>
<thead>
<tr>
<th>१</th>
<th>२</th>
<th>३</th>
<th>४</th>
<th>५</th>
<th>६</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>१</td>
<td>विक</td>
<td>कज</td>
<td>कौर</td>
<td>कुरंग</td>
<td>मृग</td>
</tr>
<tr>
<td>२</td>
<td>कंठ</td>
<td>गुख</td>
<td>नाक</td>
<td>नैन</td>
<td>भोह</td>
</tr>
<tr>
<td>३</td>
<td>वसंत</td>
<td>शरद</td>
<td>हिम</td>
<td>शिशिर</td>
<td>मधुप</td>
</tr>
<tr>
<td>४</td>
<td>ब्रह्म</td>
<td>बात</td>
<td>वीड</td>
<td>वक्र</td>
<td>वाद-व्याद</td>
</tr>
<tr>
<td>५</td>
<td>जोर</td>
<td>भोर</td>
<td>ढोर</td>
<td>दोर</td>
<td>कोर</td>
</tr>
<tr>
<td>६</td>
<td>क्रौं</td>
<td>क्रां</td>
<td>कुज</td>
<td>कृष्ण</td>
<td>कोशल</td>
</tr>
</tbody>
</table>
भावार्थ:

राधिकाजी के छ: अंगो को छ: प्रकार के विशेषण युक्त उपमाएँ दी गई हैं और यह खट विधानी काव्य कहा जाता है।

(1) (1) कोयल (2) कमल (3) तोता (4) हिरन (5) भ्रमर (6) चंद्र जैसी शोभा धारण करनेवाली राधिकाजी का - जिसका

(2) (1) मधुरकंठ (2) मुख (3) नाक (4) नेत्र (5) भ्रमर (6) भाल दिखता है

(3) (1) वसंत की कोयल (2) शरद ऋतु का कमल (3) हेमंत ऋतु का तोता (4) शिशिर ऋतु का हिरन (5) वसंत ऋतु का भ्रमर (6) चंद्र दूसरे पशुबाढ़का आधा और नीचे सींगवाली दूज

(4) (1) आंब्र कुंज की कोयल (2) पानी में रहनेवाला कमल (3) पके घीलोड़े पर रहता तोता

(4) पर्वत पर रहनेवाला (हिरन) (5) कमल में रहता भ्रमर (6) संध्या समय का चंद्र

(5) (1) विश्री कोयल (2) वायु से हिलता कमल (3) लज्जाशील तोता (4) तिरछी दृष्टिवाला हिरन (5) गुनुमुनाता और स्वादिष्ठ भ्रेमर (6) राहु ग्रसीत आधा चंद्र

(6) (1) कूकती कोयल (2) प्रातःकाल का कमल (3) आसनस्थ तोता (4) दैर्घ्य हिरन

(5) कमल पर घृसता भ्रमर (6) अर्धोलाकार चंद्र

(7) (1) खेलती-कूदती कोयल (2) मनमोहक कमल (3) घेरों के बीच रहता तोता

(4) कालियार हिरन (5) कमल की दांके पर भ्रमण करता भ्रमर (6) दोषारत्री सा चंद्र

ब्रह्मानंद राधे तन स्वाद खट देखिये।(३९)

खटविधानी कोष्ठक

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम</th>
<th>1</th>
<th>2</th>
<th>3</th>
<th>4</th>
<th>5</th>
<th>6</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td></td>
<td>कोयल</td>
<td>कमल</td>
<td>तोता</td>
<td>हिरन</td>
<td>भ्रेमर</td>
<td>चंद्र</td>
</tr>
<tr>
<td>1</td>
<td>कंठ</td>
<td>मुख</td>
<td>नाक</td>
<td>आँख</td>
<td>भ्रेमर</td>
<td>भाल</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>वसंतकी</td>
<td>शरद का</td>
<td>हेमंत का</td>
<td>शिशिर का</td>
<td>वसंत का</td>
<td>पूर्णिमा का</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>आंब्र कुंज की</td>
<td>पानी में रहता</td>
<td>बीबल का</td>
<td>पर्वतीय</td>
<td>कमल का</td>
<td>संध्या</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td></td>
<td>कालीन</td>
</tr>
</tbody>
</table>
(२) अद्वितीय गाय (मन्हर छंद)

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम</th>
<th>१</th>
<th>२</th>
<th>३</th>
<th>४</th>
<th>५</th>
<th>६</th>
<th>७</th>
<th>८</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>१</td>
<td>गज</td>
<td>हंस</td>
<td>रंभ</td>
<td>सिंह</td>
<td>शुक</td>
<td>मून</td>
<td>अलि</td>
<td>व्याल,</td>
</tr>
<tr>
<td>२</td>
<td>गति</td>
<td>गति</td>
<td>जंगा</td>
<td>लंक</td>
<td>नाक</td>
<td>ग्रं</td>
<td>श्रीह</td>
<td>बेनी है ?</td>
</tr>
<tr>
<td>३</td>
<td>मद</td>
<td>मान</td>
<td>मध्य</td>
<td>मार</td>
<td>मुन</td>
<td>मंजु</td>
<td>मल</td>
<td>मिले,</td>
</tr>
<tr>
<td>४</td>
<td>धीर</td>
<td>धीर</td>
<td>दल</td>
<td>वल</td>
<td>कल</td>
<td>फल</td>
<td>चल</td>
<td>दल</td>
</tr>
<tr>
<td>५</td>
<td>शाम</td>
<td>स्पैट</td>
<td>स्थूल</td>
<td>शूर</td>
<td>शोभा</td>
<td>शंक</td>
<td>वंक</td>
<td>छेल,</td>
</tr>
<tr>
<td>६</td>
<td>सूप</td>
<td>सूप</td>
<td>रस</td>
<td>रोस</td>
<td>लोष</td>
<td>फलवं</td>
<td>फलवं</td>
<td>सुरूपनी है,</td>
</tr>
<tr>
<td>७</td>
<td>नीक</td>
<td>नीक</td>
<td>नम</td>
<td>छोट</td>
<td>शुद्ध</td>
<td>मोद</td>
<td>मकरन</td>
<td>मनी,</td>
</tr>
</tbody>
</table>
सी, हाथी और हंस-सी बेट, रस भरी केलि-सी, क्रोधित सिंह-सी, संतोषी तोते-सी, हिसन और भ्रमर-सी धूमली, चंदनवृक्ष में रहते साँप-सी, हाथी और हंस-सी मनोहर, झुकीसी केलि समान, सिंह के बच्चे-सी, शुद्ध नरलके तोते-सी, आनंद में प्रभुजित हिरन-सी, सुगंध ग्रहण करते भैंबरे-सी, फणीधर-सी, ऐसे अंगोवाली राधिकाजी श्रीकृष्ण भक्ति को सुख देने वाली हैं।

ब्रह्मांड स्वामी का सुमधुर कंट, स्पष्ट उत्तरार्थ बोलने की विशिष्ट शैली एवं शब्दों के अर्थ देकर समझाने की उत्तम कला से सभा में उपरिथित सब दिमुड़ हो गए। चंद्रमणि शर्मा पलभर सोचते रह गए कि ऐसे विठ्ठन एवं प्रभावशाली संयासी या साधु को कभी किसी में नहीं देखा। ब्रह्मांड स्वामी की अद्भुत काय्य समर्थी एवं भव्य योगी स्वरूप से आकर्षित होकर भरी सभा में पंखह चंबलालजी उन्हें चंद्रमणि शर्मा ब्रह्मांड स्वामी को साहांग दंडवत प्रणाम करने लगे।

यही पंखह चंद्रमणि आगे चलकर स्वामिनारायण संप्रदाय में दीक्षित हो गए।

3.1.29 विविध भाषा का ज्ञान:

ब्रह्मांड स्वामी अनेक भाषाओं के ज्ञानी थे। इस बात का प्रमाण है। श्री एमल खाँचर के दरबार में भावनगर दरबार के राज्य खर्च अधिकारी राव साहब लक्ष्मणराव संगीत साहित्य के अभ्यस्त होने के कारण उन्होंने ब्रह्मांड स्वामी की, हिन्दी के अलावा अन्य भाषा के ज्ञान है या नहीं, परीक्षा हेतु पूछा: महाकवि हिन्दी के सिवा अन्य भाषा के काय्य सुनाईए।

सुनते ही ब्रह्मांड स्वामी ने कहा-सुनो-एक बड़े राजा की कुंवरी बीमार हुई। उसके पास देश विदेश से छः सखियों आई हुई थी। उन्होंने अपनी अपनी भाषा में कुंवरी की बीमारी विषयक बातें पूछीं, उसे सुनी-ऐसा कर कह ब्रह्मांड स्वामी काय्य सुनाने लगे। यह काय्य गुजरती, कबीरी, मराठी, मारवाड़ी, उर्दू, संस्कृत भाषा में काय्य रचनाकर कविता सुनाई थी। (४१)

3.1.30 साहित्यकारों के प्रति स्नेह:

जुनागढ़ नवाब के दरबार में गढ़वी जीवाभाई तथा कवि छगनभाई ब्रह्मभंड को राजकवि पद हेतु नवीन काय्य रचना का आदेश मिला। उस वक्त गढ़वी जीवाभाई ब्रह्मांड स्वामी के पास
गए और सारी हकीकतें बयान कीं। ब्रह्मान्द स्वामी ने इन्कार किया कि वह भगवान और उनके भक्तों के अलावा किसी भी मनुष्य पर काय्य रचना नहीं करते। गद्वी जीवामाई के खालित ब्रह्मान्द स्वामी ने सूचन करने का कहा। ब्रह्मान्द स्वामी के आश्चर्य, हंगाम और आश्चर्यदाय से सुंदर उपमायुक्त काय्य रचना की। पर ब्रह्मान्द स्वामिने शर्त रखी कि अगर नवाब कचहरी में बुलाकर पूछेंगे तो मैं बूढ़ नहीं बोलूँगा।

दूसरे दिन ब्रह्मान्द स्वामी को दरबार में बुलाया गया। सारी हकीकत ब्रह्मान्द स्वामी ने नवाब को सुनाई। खुश होकर नवाब ने मूँह माँगा इनाम देना चाहा। तब ब्रह्मान्द स्वामी ने इन दोनों साहित्य कारों के लिए एक एक गाँव खरात में माँगा। नवाब ने दोनों को गाँव ही नहीं जुनागढ़ राज्य के राज कवि के रूप में भी स्थापित किया।

3.1.31 श्री हरि की ढांढी के रूप में:

ब्रह्मान्द स्वामी सहजानंद स्वामी के इस रूप में सम संख्या, देविन्द्र, सहस्रविधानाचार्य, पिंगलाचार्य, संगीताचार्य, तर्कवाचस्पति, महामहोपाध्याय, ज्योतिष शालिकोत्र, सामुद्रिक, स्थापत्य, आरोप, खगोल, कामसूत्र, योगसूत्र, मानस विशारद, कुशल राजनीतिज्ञ, शीघ्र कवि, आश्रम ब्रह्मचारी, महासम्भव संत थे। इतनी विशेषताएं होती हैं। भी उन्होंने अपने आपको सहजानंद (श्री हरि) की “ढाँढी” (४२) के रूप में प्रस्तुत किया है।

3.1.32 संतों की ‘माँ’ ब्रह्मान्द स्वामी:

सहजानंद स्वामी ने अपने परम्परा को साधना हेतु रसों का त्याग करवाया था। अतः संतोंने छाए का देश भी बंद किया था। गुजरात प्रदेश में उपन्यास में गर्मी उपवास हेतु सेरी में गर्मी का जोर बढ़ा जाने से “स्वास्थ्य” (४३) हो गए थे। ब्रह्मान्द स्वामी सहजानंद स्वामी के द्वारा कारिकायां में हो से उत्सव में उपश्रेष्ठ होने के लिए अपनी संतमंडली के साथ थोड़े दिन पहले पौधे। “संतों की माँ” ब्रह्मान्द स्वामी को संतों के प्रति दया-भावना और प्रेम था। संतों के दृढ़ों का युक्ति के साथ सहजानंद स्वामी को निवेदन करने की बात मन-ही-मन सोची। रात की सभा में ब्रह्मान्द स्वामी ने सभा में संतों से उनकी सिंहार लाने को कहा। पर रात को एक भी
संत देख नहीं पा रहा था, अतः कोई उठकर नहीं आया। यह सारी बात जब सहजानंद स्वामी के ध्यान में आई, उस दिन से सब खाने की अनुमति दी गई।

3.1.33 काव्य-चतुराई की प्रश्नो-तरीः

एक दिन मूली के चारण कवि के यहाँ लमोत्सव था। देश-देशवर-देशवर से कविराज पढ़ारे आए थे। सभी कवि मूली में मंदिर देखने और चारण कुल के प्रख्यात कवीशर ब्रह्मानंद स्वामी के दर्शन हेतु पहुँचे थे। इन कवियों में कच्छ, गुजरात, हालार, गोहिलवाड़, सोरठ, झालावाड़ प्रदेश के से: किव्यों ने ब्रह्मानंद स्वामी को निम्नलिखित चं: प्रश्न पूछे–

(1) सागर पुत्री का नाम क्या है?
(2) जीवन का निवास कहाँ है?
(3) तीर्थयात्रा के लिए जाैं या न जाैं?
(4) गोप (गोकुल का) पति कौन?
(5) श्री को प्रिय तौर कौन?
(6) कौन काल में कितन (लोगों को) निष्कामी कौन करता है?

इन चतुराई प्रश्नों के उत्तर सहजानंद स्वामी ने एक ही सवैया छंद की अंतिम पंक्ति में दिया।

प्रश्न : प्रश्नोत्तर सवैया छंद –

उत्तर
(1) कौन सुताशु शुभ सागर की, श्री
(2) कर्ण वास वसे जीव अंतरजाली सह (सा हो)
(3) तीर्थ कारण जाऊं न जाऊं जा
(4) गोप पति कौन गोकुल गामी नंद
(5) कौन कहो सतिने अवि वल्लभ स्वामी
(6) कौन करे मनमें निष्कामी सहजानंद

प्रश्न : सुणी मुनि ब्रह्म कह सुणो,
उत्तर : श्री, सह, जा, नंद, स्वामी (४४)
उपरुक्त छः प्रम्णों के उत्तर मात्र अंतर्भाविक सवेया छंद की एक ही अंतिम पंक्ति में सुनकर सभी कवि राज ब्रह्मानंद स्वामी के चरणार्थिवं वंदन कर उनकी बुद्धि शक्ति एवं शीघ्र कवित्व की प्रशंसा करते हुए चले गए।

3.1.34 गुणों के सागर ब्रह्मानंद स्वामीः

ब्रह्मानंद स्वामी अत्यंत सुंदर, सबल, गैरवर्ण थे। कदावर एवं सुगठित शरीर, मारवाड़, शूरवीर, लगातार बोलना एवं विनोदी स्वभाव के अत्यंत बुद्धिमान एवं समयोचित हाजर जवाबी थे। ब्रह्मानंद स्वामी कभी भी बेश्यान नहीं होते थे। कोई भी कार्य करने में निपुण थे। राजनीतिज्ञ, शीघ्र कवीश्वर थे। संस्कृत के सिद्धांत कौमुदि के अभ्यस्त, अनेकविध भाषाओं, बोलियों बोलना एवं उसी भाषा में काव्य की रचना भी करते थे। वे अद्वितियाँ, शतावधानी और सहरसविधानी थे। साथ ही सरल भी थे। श्रीजी, मुक्तानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी को गुरुत्वात्मक मानते थे। इतना ही नहीं ब्रह्मानंद स्वामी के साथ इनका सुखाभाव भी था। अतः हास्य, विनोद करते रहते थे।

ब्रह्मानंद स्वामी स्वरूपनिष्ठ, दिलेश, दयालु और उदार मने के थे। सत्यवादी और स्पष्ट वक्ता भी थे। प्रभावशाली, महान, तेजस्वी मुखाकृति, देखते ही व्यक्ति को सहज ही गुरुभाव प्रकट हो जाता था। ब्रह्मानंद स्वामी अखंड नैष्कर्म ब्रतवर्ती, बाल ब्रह्मचारी, वचनसिद्ध महान योगीज थे। धर्मभावित, कुलभावित, एवं ढट वर्ती थे। पिंगल शास्त्र के प्रखर आचार्य थे। ब्रह्मानंद स्वामी की प्रकृति मिलन सार और विनोदप्रिय प्रकृति थी। सदैव ब्रह्मचारी, मस्ती में मस्त रहनेवाले, अलमस्त योगी थे। ऐसे शुभ गुणों के सागर थे ब्रह्मानंद स्वामी।

3.1.35 ब्रह्मानंद स्वामी का शिष्यवृद्धः

ब्रह्मानंद स्वामी का शिष्यवृद्ध बहुत ही बृहद एवं महागुणी था। ब्रह्मानंद स्वामी के साथ नित्य ही 60-70 साहित्यों का वंद धूमता रहता था। इन में बहुतेक संत संस्कृत, प्राकृत का अभ्यास भी करते थे। इस शिष्य बंद में गुणातीतानंद स्वामी, देवानंद स्वामी, पूर्णानंद स्वामी, तनुरानंद स्वामी, भोमजीनंद स्वामी, महानाथानंद स्वामी, अवदतानंद स्वामी, निर्देशानंद स्वामी, श्रृंखलानंद स्वामी, नरेन्द्रायणानंद स्वामी, ज्ञानसचरुपानंद स्वामी, अद्वैतानंद स्वामी,
यजपुरुशानंद स्वामी, वेन्नवानंद स्वामी, महापुरुषदास स्वामी, ज्ञानप्रकाशानंद स्वामी ये सब ब्रह्मानंद स्वामी की शिष्य परंपरा में स्थान प्राप्त शिष्य हैं।

कच्छ-भूज में समाधि निष्ठ अच्छुदनासजी स्वामी अमदावाद के प्रभुदास स्वामी भी ब्रह्मानंद स्वामी के शिष्य थे। इस प्रकार अमदावाद, मूली कच्छ-भूज, धोलका और जुनागढ आदि मंदिरों में आज भी कई संत ब्रह्मानंद स्वामी गुरु परंपरा के हैं।

श्री ब्रह्मानंद स्वामी के अग्रगण्य संतों और पार्शद

ब्रह्मानंद स्वामीका संत पार्शद (मंडल) सभी मंडलों (पार्शदों) में सबसे बड़ा है। इसमें ७० के आसपास पार्शद-संत थे। दूसरे क्रम पर (संख्या बल से) बड़ा पार्शद (मंडल) स. गु. मुक्तानंद स्वामी का था। उनके मंडल में ५५ (लगभग) संत-पार्शद थे।

ये दोनों मंडल बड़े होने से उनकी साधु जायका जीवा खाचर के दरबार में थी। श्री ब्रह्मपुर्णि के शिष्य बृंद में मुख्य त्यागी शिष्य १२ थे और पार्शद बृंद में शिष्य भुजौजी थे, जो परंपरानुं क्रम से निम्न लिखित है—

|| ब्रह्मानंद स्वामी के मंडल का संतवृक्ष||

क्रम (१) जुनागढ मंदिर और क्रम (२) मूली मंदिर (क्रम—२ सह) इन शिष्य बृंदोंकी, शाखाएँ वर्तमान में मूली मंदिर में विद्यमान हैं। जिस को 'साधु' मंडल से पहचानना जाता है। क्रम १० अमदावाद मंदिर, क्रम ११ धोलका मंदिर, और क्रम १२ कच्छ भूज मंदिर का है।

अमदावाद भूज और जुनागढ मंदिरों के संत और पार्शद स. गु. श्री ब्रह्मानंद स्वामी की परंपरा के हैं।

संत-बृक्ष में मुख्य-मुख्य नामों का ही उल्लेख किया गया है।

|| संत-बृक्ष ||

- जुनागढ मंदिर
- मूली मंदिर
- अमदावाद मंदिर
- धोलका मंदिर
- कच्छ-भूज मंदिर

(१) (२ से १) (१०) (११) (१२)

१९६
श्री ब्रह्मानंद स्वामी का शिष्य चूंड

<table>
<thead>
<tr>
<th>1</th>
<th>पूर्णांक</th>
<th>↓</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>2</td>
<td>मुली</td>
<td>↓</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>घोलक</td>
<td>↓</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>वधाराबाद</td>
<td>↓</td>
</tr>
</tbody>
</table>

<table>
<thead>
<tr>
<th>5</th>
<th>कविन्द्र पूजा</th>
<th>↓</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>6</td>
<td>पुजारी</td>
<td>↓</td>
</tr>
<tr>
<td>7</td>
<td>पुजारी</td>
<td>↓</td>
</tr>
<tr>
<td>8</td>
<td>पुजारी</td>
<td>↓</td>
</tr>
</tbody>
</table>

| 9 | भिक्षु | ↓ |

भविष्यवादीक कामदासजी (महंत)

अनुसरणीय विवरण:

- साधारण स्वामी
- देवनंद स्वामी
- तदुपनंद स्वामी
- वधाराबाद स्वामी
- अनुग्रहासन स्वामी
- निन्दाशानंद स्वामी
- पुजारी
- पुजारी
- पुजारी
- पुजारी
- पुजारी
- पुजारी
- पुजारी
- पुजारी
- पुजारी

साधारण स्वामी की शिष्यता के बाद, वे आगे गुरु-शिष्य संबंधों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।
श्री ब्रह्मानंद स्वामी की काव्य विरासत

ब्रह्मानंद स्वामी

| देवानंद स्वामी | कृष्णानंद स्वामी | मंतुकेश्वरानंद स्वामी | रामदीपकांम्ब स्वामी | पुरुषानंद स्वामी | भोगानंद स्वामी | केशवानंद स्वामी | कमलानंद महेंद्र | दिनांक 
|-----------------|-----------------|---------------------|---------------------|-----------------|-----------------|-----------------|-----------------|--------
| गीतसंग संहिता | रघुराजदास रघु | दलदातम कवि | कवि नाथालाल | कवि महानाथाल | कवि महानाथाल | कवि महानाथाल | कवि महानाथाल | कवि महानाथाल |
| स्वप्नभविन्त प्रायसंजी | प्रकृतिकालसजी रघु | रघुनाथदास रघु | रघुनाथदास रघु | रघुनाथदास रघु | रघुनाथदास रघु | रघुनाथदास रघु | रघुनाथदास रघु | रघुनाथदास रघु |

सामार : - सं. ब्रह्मानंद स्वामी जीवन कहानी ले.सं. नवनाथदास रघु द्वारा संपादित - ०५
3.1.36.1 देवानंद स्वामी - देवानंद स्वामी ने गुरु महिमा का आदर प्रस्तुत करते हुए ब्रह्मानंद स्वामी की काय्य परंपरा को स्वीकार किया । देवानंद स्वामी का काय्य विशेष रूप से कर्तन के रूप में संग्रहित एवं लोक प्रवालित है । जिस में विशेष रूप से ‘अंतकालिया’ नामक कीर्तन संग्रह सल्लांग में अधिक प्रसिद्ध है । ब्रह्मानंद स्वामी के कठोर परिश्रम से निर्मित मूली मंदिर में 22 साल तक अपना योगदान दिया । इतना ही नहीं गुरु इस धरोहर को आगे बढ़ाते हुए गुजराती के महा कवीश्र श्री दलपतराज ब्रह्माभाई को पिंगल पदाकर काय्य परंपरा को सौंपा था ।

3.1.36.2 पूर्णानंद स्वामी - पूर्णानंद स्वामी के कीर्तन संग्रह एवं श्रीजी की मूर्ति का सांगोपांग वर्णन ‘ध्यान विषाणिणी’ के नाम से मघुरभार छंद वर्णित है । इसके अलावा घनश्याम महाराज की चर्ची छंद में रचित काय्य भी प्रसिद्ध है ।

3.1.36.3 वैन्यानंदजी - वैन्यानंदजी ब्रह्मानंद स्वामी से एकविधान सीखे थे । ये जब विधान करते तो सब आश्चर्य चकित हो जाते थे । ब्रह्मानंद स्वामी से पिंगल भाषा का ज्ञान भी प्राप्त किया था 。“श्री हरसिंहासिंधु” एवं फुटकर छंद, कीर्तन की भी रचनाएँ की थी । गुरु परंपरा का निर्वाह करते हुए मूली मंदिर में रहे । वहाँ गढ़ी भीमजीभाई बनामभाई रत्नु को पिंगल शास्त्र पढ़ाया था ।

3.1.36.4 गढ़ी वजाभाई महेंद्र - गढ़ी वजाभाई मेहेंद्र ब्रह्मानंद स्वामी के पास पार्षद के रूप में तीन साल तक सेवा करके पिंगल विन्यास का अभ्यास किया था । ब्रह्मानंद स्वामी से आज़ा लेकर अपने बचन गए । ब्रह्मानंद स्वामी के आशिर्वाद से वजाभाई जाम साहब के राज कवि बन गए । उन्होंने ‘विभा विलास’ नामक अपने आश्रयदाता कवि की प्रशंसा के काव्य की रचना की । परिणाम स्वरूप ‘‘कॊर्डीआ’’ नामक गाँव पुरस्कार के रूप में प्राप्त हुआ था ।

3.1.36.5 गढ़ी बनामभाई रत्नु - ब्रह्मानंद स्वामी से बनामभाई रत्नु ने पिंगल का ज्ञान प्राप्त किया तथा पिंगल ग्रंथों की एवं श्री धर्मवंश प्रकाश नामक ग्रंथ की रचना की ।

3.1.36.6 शेष रुपोप्पीभाई - शेष रुपोप्पीभाई देवी गाँव के जैन वर्णिक थे । वे सत्संगी बनने के बाद ब्रह्मानंद स्वामी से ठोड़ा-बहुत पिंगल सीखे थे । उन्होंने गुजराती भाषा में रुपोप्पीभाई कृत विचार विलास’ नामक काय्य की रचना की है ।

१९९
3.1.36.7 शेष अमरसंद भाई – झालवाड़ प्रदेश के वसंतादी नामक गाँव के वाणिज्य थे। भ्राह्मणद स्वामी के कुर्यापात्र होने पर काय्य रचना करते थे। इनका कुलियाँ छठ ‘छठ रत्नावली’ में प्रकाशित है।

3.1.36.8 बिप्र केशवलाल वाणजी वैद – ये जरिका के रहनेवाले थे। भ्राह्मणद स्वामी से पिंगल का अभ्यास किया था। उन्हें बैंडकीय ज्ञान की जानकारी भी थी। वैदिक में ‘विश्वविलास प्रकाश’ और ‘केशव–कल्याण’ नामक ग्रंथ भ्रज भाषा में रचे हैं। इन में दोहा, चौपाइ, छठ की संख्या ४३१ हैं।

कवीय दलपतराम ने देवानंद स्वामी से ली परंपरा को जुनागढ़ के भ्राह्मणदी कवि श्री जगदीशानंदजी को सौंपी। उन्होंने ‘रसिक पद रचना’ नामक कीतंत्रावली रची, जो प्रसिद्ध है।

इस प्रकार परंपरा चली।

वैष्णवी जी भीमजीभाई रल्लू ने पिंगल पढ़ा। इसी परंपरा में भीमजीभाई रल्लू के पुत्र मधवदान्दी रल्लू, जो जानमार के राजकवि थे, उन्होंने भ्राह्मणद स्वामी की कृष्ण से काय्य परंपरा का पूर्ण निर्वाह करते हुए अपने पुत्र नविनदान को पिंगल शास्त्र का अभ्यास कराया। अपनी इस गुरु परंपरा को आगे बढ़ाते हुए जुनागढ़ के साहित्य भविष्यवादीजी को पिंगल शास्त्र राखा। इस प्रकार रल्लू ने काय्य परंपरा को पुनःसंतों को सौंपी।

इस प्रकार भ्राह्मणद स्वामी की काय्य परंपरा आज पर्याप्त चला है। भ्राह्मणद स्वामी रंगित कीतंत्र, छठ तथा अन्य काय्य ग्रंथ तो इस भूमि पर ‘यावचंद्र दिक्कैल्र’ अमर रहेगा। इस अमर काय्य परंपरा बदलूक बन गया। जिसे नविनदान रल्लू भ्राह्मणद स्वामी की शिष्य परंपरा को इस प्रकार बताते हैं – भ्राह्मणद स्वामी की शिष्य परंपरा में ७० संत और पार्श्व (सत्संगी) थे। इन में १२ मुख्य त्यागी शिष्य थे और अन्य पार्श्व परंपरा में अन्य थे जो इस प्रकार हैं।

3.1.37 भ्राह्मणद स्वामी के जीवन के अन्य प्रसंग:

शिल्प कला में माहिर भ्राह्मणद स्वामी इतने निपुण थे कि मंदिर निर्माण में उन्हें किसी की भी सहायता की आवश्यकता नहीं होती थी। भ्राह्मणद स्वामी ने ‘राजव्याल्लभ’ और ‘प्रज्ञानमन्न’
शिल्पकला के ग्रंथों का अध्ययन किया था। बड़ताल एवं घोलेरा के मंदिर की कमानें आज भी मौजूद हैं, जो ब्रह्मानंद स्वामी की शिल्पकला का अनन्त नमूना है।

एक बार सहजानंद स्वामी ने मुक्तानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी आदि चार स्वामियों को बुलाकर उनमें प्रवर्तित कोई एक चमत्कारिक गुण जो सहजानंद स्वामी की देन है, बताने के लिए कहा, तब ब्रह्मानंद स्वामी की बारी आने पर उन्होंने बताया कि आपकी कृपा से मैं जो भी काय्य रचना करता हूँ उसकी प्रभावोत्पादकता के लिए मुझे कहीं से शब्दों को हूँझना नहीं पड़ता। वे सहज ही आ जाते हैं। ये थे रस एवं अलंकारों से भरे शब्द। इतना ही नहीं मेरे रचने हुए काव्यों में कभी भी पिंगल शास्त्र का काय्य दोष नहीं होता, साथ ही इस लोक से कितना ही महान भाषा कवि क्यों न आए मेरे काव्यों में इतने काय्य शास्त्रार्थ हैं कि मुझे कोई जीत नहीं सकता। यह सब आपकी ही कृपा का फल है।

ब्रह्मानंद स्वामी का नित्य नियम कि हसरोज़ प्रातःकाल ‘अक्षर ओरढ़ख’ के पास बैठकर,

‘‘प्रातः धयुः मन मोदन प्या, प्रितम शुं रक्खा पोद्दी रे’’

(हे मोदन प्यारे प्रातः हो गया फिर भी हे प्रितम अभी भी आप क्यों सो रहे हैं ?)

यह प्रभाती बोलते और अंतिम पंक्ति में, ‘‘ब्रह्मानंद ना नाथ विहारी उठो आलस छोड़ो रे।’’(७५)

(हे सहजानंद के नाथ सब आलस छोड़ो उठिए।)

तब सहजानंद स्वामी आलस त्याग कर उठते थे।)

3.1.38 वालम का विरोध:

किसी भी भाषा में बाह मासा को काय्य के रचयिता कार्तिक मास से शुरू कर अधिक और अधिक मास में पूर्ण करते हैं। पर ब्रह्मानंद स्वामी सहजानंद स्वामी के अक्षरबार जेठ मास के कारण भर्ति से बाह मासा प्रारंभ करते हैं। हरेक ऋतु में सहजानंद स्वामी के लीला चरित्र को याद कर वर्णन शुरू करते और अंतिम पंक्ति नामा चरण में प्रारंभ करते हैं – ‘‘हे स्वामी! हे घनस्थाम! अब पदार्थों, पदार्थों।’’ गुजराती भाषा में क्रूण रस में वर्णित यह बाह मासा एवं लीला चरित्र का मेल अद्वितीय है। गुजराती काय्य की यह उपकी अंतिम कृति है।
बारह मासा के १३ पद हैं। अंतिम पद की अंतिम पंक्ति में भ्रान्तांद स्वामी जगत से उदास होकर सहजानंद स्वामी की अंतिम इच्छा व्यक्त करते हुए प्रार्थना करते हैं कि - ‘‘भ्रान्तांद की विनिमय उर घरजो अविनाशी; महेंर करने मायकी, तेथे लेजो तम पास।’’\(\text{(४६)}\)

(भ्रान्तांद स्वामी की विनिमय है - ‘‘हे अविनाशी प्रमु हुदय में धारण कर के कुपा कर प्रभु आप मुझे ले जाओ’’)

यह भ्रान्तांद स्वामी का श्रीजी महाराज के प्रति असाधारण प्रेम ही है जो बारह मासा में विरघ के दुःख वन पंक्ति स्वस्वरूपण बहा है। बारह पदों के अंत में भ्रान्तांद स्वामी ने अपने पास ले जाने की ही बात कही है। देवानंद स्वामी कहते हैं - ऐसे ही विनिमय करते हुए उन्होंने अपनी लेखनी (कलम) का स्वागत किया। देवानंद स्वामी से भ्रान्तांद स्वामी कहते हैं - ‘‘श्रीजी महाराज की मरजी से यह अंतिम काय्य पंक्तियाँ लिखी हैं। अब श्रीजी की मूर्ति के सामने बैठने दो। आप मंदिर की सारी जिम्मेदारी सम्भाल लें।\(\text{(४७)}\)

फिर भ्रान्तांद स्वामी ने कभी भी कलम नहीं उठायी और मूर्ति सुख में अखंड रहने लगे।

\textbf{3.1.39 भ्रान्तांद स्वामी की चित्र प्रतिमा:}

लखनो की ओर से एक चित्रकार मूली आया था। मंदिर की भव्यता को देखता ही रह गया। मंदिर के निर्माण करता को भी देखा और सुना कि वे महान कविकर निर्माण करता को भी देखा और सुना कि वे महान कविकर भी हैं। वे नीम के पेड़ के नीचे बैठे हैं। उनको देखते ही चित्रकार ने भ्रान्तांद स्वामी के दूर से दर्शन किए। भ्रान्तांद स्वामी की गौरवण प्रभावस्वाधक मूर्ति को देखा उस के हुदय में भ्रान्तांद स्वामी का चित्र बनाने की इच्छा हुई। अपने पास कोई साधन सामग्री न होने के कारण सोचने लगा। तभी पास में पड़ा कोयला उठाकर मंदिर की क्षेत्र दिवार पर भ्रान्तांद स्वामी को निरक्त हुए शांतिपूर्वक भ्रान्तांद स्वामी का चित्र बनाकर बिना किसी को बताए वहाँ से बिदा हुआ। संध्या समय देवानंद स्वामी की दृष्टि इस सुंदर चित्र पर पड़ी। पास में काम करते राज (मंजबूर) से पूछने पर पता चला कि कोई चित्रकार कोयले से कुछ कर रहा था। देवानंद स्वामी ने चित्र प्रतिमा को देखा तो देखते ही रह गए। मनोहर मुखवकृति, उसके भाव को
देखकर कागज पर उस चित्र को आलेखित कर लिया । यह कागज अपनी पूजा झोली में रख दिया । दूसरे दिन ब्रह्मानंद स्वामी ने देखा, प्रशंसा की और मिटा दिया ।

22 साल तक देवानंद स्वामी उस मंदिर में रहे । तदुपरांत दुधानंद स्वामी को कागज की मूल्य दी । उन्होंने जामनगर के अच्छे विचारक के पास दुबारा मूल्य बनाई । यह चित्र प्रतिमा ब्रह्मानंद स्वामी के अंतिम दिनों की है ।

3.1.40 ब्रह्मानंद स्वामी का देहावसान :

स्वामिनारायण संप्रदाय का यह देवित्यमान सितारा ठीक उसी दिन अस्त हुआ जिस दिन ठीक दो साल पूर्व सहजानंद स्वामी ने अपना पंचमहाभूत शरीर से प्राणोत्सर्ग किया था । सहजानंद स्वामी के अक्षराधाम गमन पश्चात् ब्रह्मानंद स्वामी को अस्तर वियोग हुआ । श्रीजी की ही आज़ा से वे मूली मंदिर निर्माण हेतु यहाँ आए थे तभी से वे मूली मंदिर को ही अपनी साधना का क्षेत्र एवं कर्मभूमि बना लिया था । कहते हैं कि अंतिम समय की जानकारी प्राप्त होते ही उन्होंने अपने शिष्यों, भक्तों को पास बुला लिया था और अपने शिष्यों को अग्र निर्देश देते हुए देख का त्याग किया । सहजानंद स्वामी से उनका संख्या भाव था । अतः उनके सूक्ष्मरूप का दर्शन करने वे बेताब हुए थे ।

स्थूल शरीर से श्री हरि से मिलना संभव नहीं हुआ । अतः एक चित्र से प्रभु के गुण गान गाते हुए भोक्ता की प्राप्ति की । वे अंत समय तक प्रभु के गुण गान, श्रेष्ठ साहित्य सूजन के साथ मंदिर स्थापना निर्माण करते रहे ।

सं. १८०८ की ज्येष्ठ शुक्ला दशमी (ई.स. 8 जून, १८३२) शुक्रवार के दिन(४८) मूली मंदिर में ही ब्रह्मानंद स्वामी ने अपनी नश्वर देख का त्याग किया । कहते हैं, उस दिन प्रातः काल को ही अपने नित्य क्रम से मुक्त होकर श्री हरिकृष्ण महाराज के सम्मुख बैठकर, मंगला आरती के बाद वही सितारा बजाने लगे, जो श्रीजी महाराज ने दी थी । श्री नवनियन रत्नु लिखते हैं -

“आवाज सुनकर मयूर बोलने लगे, ब्रह्मानंद स्वामी ने पहले

“अधम आधारण अविनाशी तारा बिरदनी बलिहारी रे！”

203
गाया। बाद में “प्राण सन्नद्धी, धरु आवो पियारा, हिष्टारी धरत नहीं मेरा रे।” पद
गाया। इन पदों को सुनकर और सितार की ध्वनि को सुनकर हर कोई मंदिर में दौड़े हुए आए।
मनोहर मूर्ति के सामने अनंत आशा घटा बैठे रहे। अंत में श्रीजी के बाहर गाया के -

“जेठ (ज्येठ) जीवन चालीया निमोही मारा नाथ”*(49)*

अति गद्दे गद्दे एवं प्रेरण से गाते हुए हरिकृष्ण महाराजश्री की मनोहर मूर्ति के सामने अनन्य
दृष्टि से गाएं, सितार बजाते, कीर्तन गाते गाते मानो प्रत्यक्ष प्रभु के समुख उसे देखते हो, वैसे
आधे घंटे बैठे रहे (40)। आँखों से विराहभु, प्रेमाभु की धाराओं बहने लगीं, हाथ में पकड़ा सितार
भीगा हुआ जैसे का वैसा था हुआ। वातावरण में सर्वत्र शांति व्यास थी। श्रुति आर्थ के बाद
जलपान कर देवानंद स्वामी को सितार देते हुए हरिकृष्ण महाराज की मूर्ति के समुख बैठकर
हरसूज़ चार पद गाने की इच्छा प्रकट की और कहा इस मूर्ति में श्रीजी महाराज साक्षात
विराजमान हैं। फिर श्रीजी महाराज की मूर्ति का विविध अर्चन अर्चन किया। भूज, मार्वाड़,
गढ़पुर, अमदाबाद सभी स्थानों पर अपने साथी-संतो, पार्षदों, हरिकृष्ण हरिकृष्ण सभी को ब्रह्मानंद
स्वामी की अवस्था के समाचार एकत्रित हरिकृष्ण मूली पढ़ाए। साथ में उपस्थित सबको संबोधन
किया कि श्रीजी महाराज मुझे अपने धाम में ले जाएँ। इस बात का शोक मत करें और चापाई
बोले -

जहाँ सुसंगत तहाँ संपति नाना,

जहाँ क्रुसंगत तहाँ विपति निदाना।*(49)*

और अधिक शिक्षाप्रदी के वचन कहते हुए सबको आश्वासन दिया। राज्यों की आर्थी
के पश्चात् सबको “स्वामिनारायण” मंत्र का जाप कराते हुए भजन करने लगे। तब कमरे में
महाशीतलता फैल गई। उसी समय ब्रह्मानंद स्वामी पर दिव्य चंदन-पुष्प की वृक्ष हुई। ब्रह्मानंद
स्वामी ने दोनों हाथों से प्रणाम करते हुए उच्च स्वरों से सबको ‘जयश्री स्वामिनारायण’ कहा।
तुरंत ही श्रीजी महाराज ब्रह्मानंद स्वामी को ले जाने के लिए पदार्ज। उपस्थित सबको भी उस
dििय द्वार के दर्शन हुए। इस प्रकार ब्रह्मानंद स्वामी ने मूली मंदिर में ही ब्रह्मानंदजी ने अपनी

204
नशवर देह का र्याण किया। मूली मंदिर में आज भी उनका स्मारक ह्रेष्ठ भक्ति होने की प्रतीति कराता है।

महाकवि ब्रह्मानंद स्वामी के समग्र जीवन का विश्लेषण करते हुए श्री नवनिदान रत्नू लिखते हैं - ‘इस पृथ्वी पर वे ६० साल, ५ मास और ५ दिन रहे, उनमें से १८ साल जन्मभूमि में, ९२ साल कच्च में, ३ साल राजस्थान में पर्यटन किया और २५ साल श्रीजी के साथ सत्संग में रहे। श्रीजी के धामगमन के बाद २ साल, ५ मास और ५ दिन मूली में रहे। इस प्रकार कुल मिलाकर ६० साल, ५ मास और ५ दिन वे पृथ्वी पर मानव शरीर के रूप में रहे।’

3.2 ब्रह्मानंद स्वामी का साहित्य दर्शन:

कवि के जीवन परिचय के बाद उनके कृतित्व का परिचय देना उचित होगा -

स्वामिनारायण संग्रहाय के अष्ट कवियों में-

(१) श्री ब्रह्मानंद स्वामी (२) श्री प्रेमानंद स्वामी (३) श्री मुक्तानंद स्वामी

(४) श्री देवानंद स्वामी (५) श्री निष्कुलानंद स्वामी (६) श्री कृष्णानंद स्वामी

(७) श्री भूमानंद स्वामी और (८) श्री मंजुकेशानंद स्वामी

इन अष्ट स्त्राओं में ब्रह्मानंद स्वामी का साहित्य अलग ही प्रतिप लोटा है। जिसमें प्रेम, भक्ति, भावना एवं संप्रदायक संस्कार हैं ही, साथ ही अलग शायद इस दृष्टि से भी है कि, श्रीघ कवित्व शक्ति तत्त्व आकर्षित हैं।

प्रत्येक संग्रहाय में अपने सिद्धांत, साधना तत्त्व और तत्त्वदर्शन को साहित्य के माध्यम से सुरक्षित रखने की परंपरा देखने को मिलती है। स्वामिनारायण संग्रहाय में ऐसा ही है। संस्कृत में अलग साहित्य ही प्राप्त है। ‘शिक्षापत्री’ इसमें प्रमुख है। ‘शिक्षापत्री’ और ‘वचनानुमूल’ के आदि स्थापक सहजानंद स्वामी हैं। इस सांप्रदायिक परंपरा में रचित साहित्य सहजानंद स्वामी के पश्चात उनके परम प्रिय शिष्य सहजानंद राम अन्य संतों ने भी रचाएं की हैं। रचा गया है। इस संदर्भ में ब्रह्मानंद स्वामी का जीवन परिचय पश्चात उनके साहित्यिक परिचय का मूल्यांकन देखें तो जन्मगत संस्कार के कारण ब्रह्मानंद स्वामी के साहित्य में रागत विद्यामान था। दीक्षा के पूर्व पिता के पदचिह्न चलकर राजकवि की उपाधि पानेवाले
लाखदाना या उनकी कविता जैसे ही सहजांत स्वामी के संपर्क में आयी थी. हेमल व्यास (५४)
अपने महानिबंध में लिखती हैं - "ब्रह्मांड स्वामी का समग्र राज वैभव विलास से विमुख होकर
वैश्विन्द बन गए। अपने अंतर्जीव श्री सहजानन्द कृष्ण की भक्ति से सरासरी करते हुए अपूर्व
काय्यांन्द में तीन हो गए। ब्रह्मांड स्वामी ने काव्य निर्माण द्वारा संप्रदाय, समाज एवं साहित्य को
अपूर्व सौगत प्रदान की है।
ब्रह्मांड स्वामी का काव्य भक्ति और सौन्दर्य के अदभुत समन्वय को प्रगट करता है।
संप्रदाय में सभी कवियों की अपनी एक अलग ही पहचान है। ब्रह्मांड स्वामी पट कवि हैं। पद
रचना में इनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता। ब्रह्मांड स्वामी का यह अत्यंत समृद्ध साहित्य है
उनमें न केवल गुजराती में किन्तु हिंदी, संस्कृत, ब्रज, चारणी, मारवाड़ी, कच्ची आदि भाषाओं
के साहित्य को समृद्ध किया है। राजस्थान में जन्म लेकर कच्च में शिक्षा प्राप्त की और सौराष्ट्र में
स्थिर हुए। इस दृष्टि से विविध प्रदेशों की बोली का संपूर्ण अनुभव है। ब्रह्मांड स्वामी
स्वामिनारायण संप्रदाय के एक मात्र बहुविध भाषी कवि हैं। अनेक भाषा में पद रचनाकर विविध
भाषा-बोली पर अपना प्रभुत्व प्रदर्शित कर दिखाया है।
ब्रह्मांड स्वामी मात्र पद कवि ही नहीं किन्तु बहुत बड़े अनुवादक भी हैं। अपनी शक्ति
के आधार पर मूली में संस्कृत के अनेक ग्रंथों की रचनाएँ की हैं। उनका स्पष्ट मानना था कि
समाज और समृद्ध को बोलचाल की परिचित भाषा में ही ज्ञान देना चाहिए। उनका यह भी मानना
था कि - संस्कृत भाषा है और अन्य भाषाएँ इसी से जन्म लेकर विकसित हुई हैं। संस्कृत से
कुछ अनुवाद सहजांत स्वामी की आज्ञा से किया गया है। कुछ अनुवाद-कार्य सहज ही अपनी
सज्जनता के साथ बहा है।
ब्रह्मांड स्वामी ने प्रेमलक्षणा भक्ति के काव्य सर्जन करते हुए अपने इच्छाओं को निर्धारक
रख दिया। परिणाम स्वरूप तीन दायकों के समय में साहित्य में भावों की एक अखबार अर्थतः
धारा प्रवाहित हुई। यही कारण है कि उनका काव्य हमारे इच्छा-मन को भावविभाज ही नहीं मन-
मर्मित्तक को भी मथ देता है।

२०६
ब्रह्मानंद स्वामी की कविता विषयक विशेषताओं में शीघ्र काव्य रचना उनके काव्य को क्षणति नहीं पहुँचाती। संगीत शास्त्र में निपुण होने के कारण उनके काव्य की संगीतालंकार निराली थी। उनका विषय वैविध्य अनुपम है, तो उनकी विशालवस्था हुदैयस्पर्शी है। वे शूरवीर भक्त एवं उपदेशक कवि हैं। उनका साहित्य विपुल और गौरवपूर्ण है।

ब्रह्मानंद स्वामी के काव्यों में एक ओर भक्ति का सौंदर्य है तो, दूसरी तरफ प्रेमका मधुर स्वरूप। इनमें भक्ति भावना एवं कविता शक्ति का अदभुत समन्वय दिखाई देता है। इनकी प्रतिभा को सहजानंद स्वामी ने न केवल पहचाना अपितु समीचीन मार्गदर्शन भी दिया। संप्रदाय की मान्यतानुसार सहजानंदजी ने कवि को प्रतिदिन चार पद बनाने की आज्ञा दी थी।

ब्रह्मानंद स्वामी रचित साहित्य अत्यंत समृद्ध है। सांप्रदायिक मान्यतानुसार, ब्रह्मानंद स्वामी ने 6,000 से भी अधिक पदों का सर्जन किया था। इसे श्री इश्वरलाल द्वे(५६) ने प्रमाणित किया है। इनमें से केवल 3,000 पद ही प्रकाशित हुए हैं।

ब्रह्मानंद स्वामी को विविध भाषाओं का ज्ञान था। विषय को अत्यंत प्रभावात्मक ढंग से प्रस्तुत करना ब्रह्मानंद स्वामी की प्रमुख विशेषता थी। सहजानंद स्वामी की सांप्रदायिक संकल्पना को यथा तथा मूल स्वरूप को लोगों को समझाना, प्रस्तुत करने की एक विशिष्ट विलक्षण शक्ति थी। इतना ही नहीं हिन्दू तत्त्वदर्शन के मूल हार्द की स्पष्ट समझ ब्रह्मानंद स्वामी में थी। इसी कारण साहित्य सर्जन में ब्रह्मानंद स्वामी ने बड़े सच्चे एवं सही ढंग से अभिव्यक्त किया है।

इस प्रकार सहजानंद स्वामी के प्रत्यक्ष साहित्य में प्रारंभ से ही रहना एवं साहित्य सर्जन करने का सीमाहरू ब्रह्मानंद स्वामी को प्राप्त हुआ। सहजानंद स्वामी की नित्य संगति, प्रसंगानुसार पद सर्जन प्रारंभ में महत्वपूर्ण रहा। पश्चात् सहजानंद स्वामी ने धर्म प्रवाह के लिए शिखरबद्ध मंदिर निर्माण का कार्य भी ब्रह्मानंद स्वामी को ही सौंपा।

ब्रह्मानंद स्वामी के काव्य सर्जन को डॉ. बलवंतभाई जानी(५७) चतुरविध प्रकार का बताये हैं।
भ्राह्मण्ड स्वामी के विपुल साहित्य सर्जन को इस प्रकार चार विभागों में विभाजित कर संक्षिप्त परिचय पड़िये। विस्तृत परिचय आपे मिलेगा।

भ्राह्मण्ड स्वामी के प्रकाशित प्रास ‘काव्य संग्रह’ इस प्रकार हैं—

(1) श्री भ्राह्मण्ड काव्य भाग-१ (गृजाली विभाग) संकलन—राज कवि माधवानजी रत्नु पद—
    २५६१

(२) (१) ‘भ्राह्मण्ड काव्य’ भाग—१, संपादक—नारायणसेवादासजी, पद—१९७७
    (२) ‘भ्राह्मण्ड काव्य’ भाग—२, संपादक—नारायणसेवादासजी, पद—१३८७

दोनों के पृष्ठों की संख्या—८४० शोधग्रंथ के मुख्या आधार ये हैं।

इन ग्रंथों में प्रभातिया, आर्थिक, थाल, उत्सव, भक्ति, शुंगार, ज्ञान, विलास, लीलाएँ, रास, विश्व संबंधित पद मिलते हैं।

पद रचना के अलावा भ्राह्मण्ड स्वामी ने ९८ ग्रंथों की रचना की है, जो इस प्रकार हैं—

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्रम</th>
<th>ग्रंथ का नाम</th>
<th>रचनाकाल</th>
<th>क्रम</th>
<th>ग्रंथ का नाम</th>
<th>रचनाकाल</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>१</td>
<td>उपदेश चितामणि</td>
<td>सं. ९८६१</td>
<td>१०</td>
<td>सती गीता</td>
<td>सं. ९८८३</td>
</tr>
<tr>
<td>२</td>
<td>उपदेश रत्नदीपक</td>
<td>सं. ९८६२</td>
<td>११</td>
<td>नीति प्रकाश</td>
<td>सं. ९८८४</td>
</tr>
<tr>
<td>३</td>
<td>संप्रदाय प्रदीप</td>
<td>सं. ९८७५</td>
<td>१२</td>
<td>छदरत्नावली</td>
<td>अप्राप्य</td>
</tr>
<tr>
<td>४</td>
<td>सुमति प्रकाश</td>
<td>सं. ९८७८</td>
<td>१३</td>
<td>धर्मवेश प्रकाश</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>५</td>
<td>नारायण गीता</td>
<td>सं. ९८७९</td>
<td>१४</td>
<td>धर्म सिद्धान्त</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>६</td>
<td>वर्दमान विवेक</td>
<td>सं. ९८८२</td>
<td>१५</td>
<td>विवेक चितामणि</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>७</td>
<td>शिक्षाप्रती (गृजाली पद)</td>
<td>सं. ९८८२</td>
<td>१६</td>
<td>दशावतार चरित्र</td>
<td></td>
</tr>
</tbody>
</table>

२०८
3.2.1 सुमति प्रकाश:

वीस विश्वासों (अध्यायों) में लिखित यह ग्रंथ चारणी और गुजराती में जन सामान्य में प्रयुक्त होते शब्दों के सहित हिन्दी भाषा में लिखा गया है। प्रस्तुत ग्रंथ में सहजांबंद के जीवन-प्रसंसा के साथ पंचवर्तमान के धर्म, गृहस्थाश्रमी श्री-पुरुष के उदात्त धर्म, चरित्र, प्रायश्चित महात्म्य तथा नीति आदि संबंधित उपदेश भर्डी सरल, सहज और आकर्षक भाषा शैली में दिये गये हैं। अंत में रचना पूर्ण होने की तिथि, संवत तथा स्थान का उल्लेख है।

संवत अश्वदसही, वर्ष उखेलता जान।
मा सुद पंचमी वार बुध, पुर्ण ग्रंथ प्रमाण।
श्री नगर शुभ शहर में, नरासारण पास।
तहाँ रही भ्रान्नद कवि, किन्नो सुमति प्रकाश।

ग्रंथ में दोहा छप्पय, सवैया, भुजंगी, त्रिभंगी, हरिगीत, पद्मी जैसे छंदों का प्रयोग हुआ है।

3.2.2 विवेक चित्तामणि:

असाधु और हीनब्रृतिवाले मनुष्यों के कपटाचारण के अनेक उदाहरणों से युक्त इस छोटे-से ग्रंथ में कवि ने विवेक महिमा के अनेक आदर्श उदाहरण दिए हैं। सारासार का परीक्षण भी किए हैं।
है। इसमें ६१ चंद्रावली छंद हैं। कवि ने ब्रह्मानंद के अलावा श्री रंगदास उपनाम का भी कई स्थानों पर प्रयोग किया है।

3.2.3 उपदेश वितामणि:

यह ग्रंथ भी विवेक वितामणि की शैली में लिखा गया है। ग्रंथ में ४७ (४७) चंद्रावल छंद में संत कवि ने जीव की मुख्यतापूर्ण विषयास्तित और जीवन की क्षणभंगूरता के चित्रण के माध्यम से उपदेशात्मक शैली में संसार के प्रति वैराग्यभाव जगाने का प्रयास किया है।

3.2.4 संग्रहाद्वार प्रदीप:

इस ग्रंथ में कवि ने अपने संग्रहाद्वार को भागवतधर्म की परंपरा का बताया है। समस्त ग्रंथ १८ अध्यायों में विभाजित हैं, जिस में वर्णनात्मक शैली में इश्वरपासना, श्रद्धा आदि का निरूपण किया गया है।

3.2.5 गुरुदेश को अंग:

बहुत छोटी रचना है। इसका विषय है – ‘गुरुभक्त’। ब्रह्मानंद स्वामी ने अपने गुरु श्रीजी महाराज के परात्तर स्वरूप का वर्णन कर उनका महिमागान किया है।

3.2.6 शूलणा:

५० ‘शूलणा’ छंद में लिखी इस रचना में कविने प्रारंभिक ३० छंदों में माध्य जीवों को चेतावनी देने के लिए कहा जाता है। बाद में छंदों में छप्रवेशधारी कपटाचारियों का भंडफोड़ करते हुए संत के लक्षण बताते हैं।

3.2.7 धर्मवंश प्रकाश:

७० पृष्ठों की इस रचना में कविने अक्षरधाम का संग्रंगांग और वितामणिक वर्णन किया है।

3.2.8 नीति प्रकाश:

इस में विदुर नीति को केन्द्र में रखकर बड़ी सरल और बोधप्रद भाषा में नीति संबंधी आलेखन किया है। इसमें आठ अध्याय हैं।
3.2.9 वर्तमान विवेक:

इसमें स्वामिनारायणीय संतों के लिए अनिवार्य पंचवर्तमान का विस्तृत वर्णन है।

3.2.10 छंद रचनावली:

इस छोटी-सी रचना में विविध विषयों के निरूपण के साथ छंद शास्त्र को प्रधानता दी गई है। इस ग्रंथ में रज, हिंदी तथा चारणी भाषा प्रयुक्त हुई है।

3.2.11 शिक्षापूर्ण पद्धातिक: (हिन्दी-गुजराती)

स्वामी सहजानंद ने अपने भक्तों को उपदेश देने के लिए और वैमिक नियमों - अवतरणों के उपदेश के लिए शिक्षापूर्ण रची थी, उसी को गर्भी शैली में पद्धातिक रूप में श्रद्धानंद स्वामी ने लिखा है।

3.2.12 दशावतार चरित:

यह ग्रंथ भागवत पर आधारित है। भगवान विष्णु के दशावतारों का संक्षिप्त वर्णन है। यह ग्रंथ दो भागों में विभक्त है। यह ग्रंथ दो भागों में विभक्त है। पहला भाग 'पंचरत्न' दोहा छंद में, दूसरा भाग 'दशावतार' चौपाई छंद में लिखा गया है।

3.2.13 सती गीता:

स्वामी सहजानंद द्वारा मूल संस्कृत में लिखी 'सती-गीता' श्रद्धानंद स्वामी ने हिन्दी में मौलिक अनुवाद के रूप में लिखी है। छः अध्ययनों में विभक्त इस रचना में दोहा, चौपाई और हरिगीति का छंदों का प्रयोग कर, जीवन की अवस्थाओं और उनके लिए अनिवार्य धर्म नियमों का निरूपण किया गया है।

3.2.14 ब्रह्म विलास:

संप्रदाय के साहित्य में यह ग्रंथ अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। ३८० छंदों में रचित ग्रंथ में काल, दुःख, विपरित ज्ञानी, सूरमा, साधु, असाधु, पतितता आदि से संबंधित उपदेश हैं।

3.2.15 उपदेश रत्न दीपक:

उपदेश रत्न दीपक की रचना संवत १५६२ में हुई है। उपदेश वितामणी की ही भौति यहाँ भी सांसारिक सर्व पदार्थों की क्षणभंगुरता का निरूपण किया गया है।

291
3.2.16 नारायण गीता :

इस छंदबद्ध रचना में कवि ने औलोकिक सृष्टि को हमारे समक्ष खड़ी की है। कहा जाता है की कवि ने संवत् 1879 में श्रीजी महाराज की उपस्थिति में गढ़पुर में रचना की है।

3.2.17 धर्म सिद्धांत :

हिंदी भाषा में लिखे गये इस ग्रंथ मे 92 अध्याय है। कवि ने यहाँ ब्रह्म की व्यास की बात कही है। यह ग्रंथ तत्वज्ञानियों के अभ्यास के लिये महत्त्वपूर्ण है।

3.2.18 धर्मकुल ध्यान : (दीक्षाविधि )

इस ग्रंथ मे दीक्षाविधि की सरसा भाषा मे जानकारी है। साथ ही धर्मवंश परंपरा का निरूपण किया गया है।

3.2.19 ज्ञान प्रकाश चित्रांशण :

उपदेश समर इस छोटे से ग्रंथ में भवित की महत्व बताई गई है। महा मूल्यवान मनुष्य देव की साधकता, भवित के बगैर जीवन की व्यर्थता, संत शरण का महत्व बताया गया है। अंत में उन्नत जीवन जीने की बात बताई है। कवि ने प्रत्येक छंद के अंत में चेत चेत नर चेत की धृव पल्लि दे कर हुद र्पर्षी उपदेश दिया है।

3.2.20 ब्रह्मानंद काव्य भाग- 1-2

फुटकर छंदों के इस संग्रह मे हिंदी, वृज, कचरी, गुजराली, आदि भाषा का प्रयोग हुआ है। इन पदों मे प्रभावी के 50 पद, आरती और थाल के 100 पद, उल्लभ के 400 पद, भवित विलास, शृंगार वर्णन और विरह वर्णन के 800 पद ज्ञान विलास, के 200 पद, और लीला वर्णन के 1000 पद मिला कर 2550 से अधिक पद होते है।

उपरोक्त ग्रंथों के अलावा ब्रह्मानंद स्वामी ने हजारों की संख्या मे फुटकर पदों की रचना की है, जिनकी भाषा तथा काव्यालंकार दृष्टिकोण से आगे वर्णन में देखें।

बहुविध भाषा एवं शास्त्रों के ज्ञाता, प्रखर पंडित ब्रह्मानंद स्वामी की काव्य साधना उनकी भवित साधना के समान ही निराली है। उनके काव्यों मे भाषा के साथ भाषा का प्रस्तुतिकरण बड़े ही सुंदर ढंग से हुआ है। ब्रह्मानंद स्वामी के पदों की विशेषता है कि उन्हें तालबद्ध रूप से
गाये भी जा सकते हैं। उनकी अभिव्यक्ति शैली एवं संगीत की संदर्भता पाठकों को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है।

ब्रह्मांड स्वामी का विपुल भवित साहित्य प्रख्य पंक्ति एवं श्रेष्ठ भक्त का परिचय देता है। उनके साहित्य में श्रीकृष्ण तथा श्री सहजानंद स्वामी के प्रति भवित के अनगिनत पद दर्शित होते हैं। नवथा भवित तथा प्रेमलक्षण भवित का चरमोत्कर्ष उनके पदों में अभिव्यक्त है। जिसे अलग अध्याय में देखें।

3.3 समापन:

स्वामीनारायणीय संत कवियों में ब्रह्मांड स्वामी के स्थान को निर्धारित करते हुए कवि का जीवन एवं साहित्य का विस्तृत विवेचन किया गया है। ब्रह्मांड स्वामी का जीवन,जन्म स्थान परिवार,पुर्वशुमं,शिक्षा,दौकार,संस्कार,सहजानंद स्वामी से मिलन व्यक्तित्व में आये बदलाव आत्मात्मक एवं भाव साधन के आधार पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। कवि के व्यक्तित्व को जान ने के पश्चात् उनके साहित्य का परिष्कारक विवेचन प्रस्तुत अध्याय में किया गया है।

ब्रह्मांड स्वामी के जीवन एवं साहित्य का गहराई से अध्ययन करने के बाद यह स्पष्ट होता है कि वे केवल संत ही नहीं,किन्तु एक प्रतिभा संपन्न साहित्यकार भी थे। उनके जीवन में कई ऐसे मोड आए जिस से वे कुछ ना कुछ विशिष्ट बनते गये। कवि के साथ एक संत,शिल्पकार संगीतजं,गायक,कीर्तिकार होना एक चमकका से कम नहीं है। उनका जीवन भी चमकका से कम नहीं है। उनका यह बहुमुखी ज्ञानज्ञत्वमान व्यक्तित्व स्वामीनारायण संप्रदाय के लिये सूर्य के समान है।

लालुदान से लंदास,लंदास से ब्रह्मांड स्वामी तक की उनकी जीवन यात्रा सचमुच प्रेमण-दायी एवं वंदनीय है। उनकी जीवन के प्रेमण-दायी एवं मार्मिक प्रसंगों का अध्ययन करने से पता चलता है कि वे सही अर्थ में ब्रह्मांड की प्राप्ति कराने वाले असाधारण व्यक्तित्व थे। उनका जीवन और साहित्य साधारण मनुष्य को भी प्रेरित करता है,एवं ब्रह्मांड की प्राप्ति करवाता है।
संदर्भसूची:

1. स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी जीवन दर्शन – श्री नविनदानजी – पृ. ३९३
2. ‘रघुवंश’-कालीदास -सर्ग-२, लोक-२ – पृ. ५
3. ‘ब्रह्मानंद पदावली’ – सं. डा. इंशरलाल दवे पृ.५
4. ‘स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी जीवनदर्शन’ – सं. नविनदान रत्नु – पृ.-१०
5. ‘भवत चितामणि’-निष्कुलानंद स्वामी, प्र.- १२०/४, पृ.-४४४ हिन्दी पद्धानुवाद
6. चारण जाति में पुस्त्रों के ‘नाम के पीछे ‘दान’ शब्द लगानेका रिवाज है।
7. ‘स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी जीवन दर्शन’ – सं. नविनदान रत्नु – मोटो क्रम-२ दोहा
8. ‘ब्रह्मानंद पदावली’ सं. डा. इंशरलाल र. दवे- पृ.-५
9. ‘ब्रह्मानंद पदावली’ सं. डा. इंशरलाल र. दवे- पृ.-३५६
10. ‘ब्रह्मानंद पदावली’ सं. डा. इंशरलाल र. दवे- पृ.-१३
11. ‘ब्रह्मानंद पदावली’ सं. डा. इंशरलाल र. दवे- पृ.-१३
12. पिंगल शास्त्र में निपूण होने के लिए उस समय समग्र विश्व में लखपत (कच्च) में ‘पिंगल-पाठशाला’, एक मात्र विद्यालय था। – ‘स.गु. ब्रह्मानंद जीवन दर्शन’ ले.
नविनदान रत्नु, पृ.-१३-१४
13. ‘श्री ब्रह्म संहिता’ – मावदान रत्नु – पृ. ४२
14. ‘ब्रह्मानंद पदावली’ – सं. – डा. इंशरलाल र. दवे – पृ.-५
15. ‘स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी का जीवन दर्शन’ सं. नविनदान रत्नु – पृ. ६६
16. ‘ब्रह्मानंद पदावली’ – डा. इंशरलाल र. दवे – पृ. ६
17. मनसे किए संकल्प
   1) मेरा परिचय सब को बताएँ।
   2) पूर्व दिशा में बैठकर काली कामली पर श्री भागवत पढ़ रहे हो।
   3) मुझे गुलाब की माला पहनाएँ
   4) पद्मचिह्न बताएँ।

२१४
२१५

२८। ‘स.ग. श्री ब्रह्मान्द द्वारा जीवन दर्शन—ल.स. नवीनदान रत्नुं पृ. १०९

२९। (१) ब्रह्मान्द ‘स्वामी काव्य—१’ सं.शा. नायायण सेवादासजी. पृ.—२३ (लाजुदान और

सहजान्द का प्रथम मिलन भूज में सुंदरजी तथा हिरजी का घर’ बताया है।

(२) ‘स.ग. श्री ब्रह्मान्द जीवन दर्शन’ नवीनदान रत्नुं — पृ. ११३

३०। ‘ब्रह्मान्द पदावली’ ड़ॉ. ईश्वरलाल र. दवे — पृ.७

३१। ‘आर्य बांध्य तौर’ — नानुमाई दवे — पृ. १७०

३२। ‘स.ग. श्री ब्रह्मान्द जीवन दर्शन’ — ल.स. नवीनदान रत्नुं पृ. १३९-१४०

३३। ‘स.ग. श्री ब्रह्मान्द जीवन दर्शन’ — ल.स. नवीनदान रत्नुं. पृ. — ३५६

३४। ‘ब्रह्म संहिता — मावजीदान रत्नुं’ — पृ. ५३

३५। ‘स.ग. श्री ब्रह्मान्द जीवन दर्शन’ — ल.स. नवीनदान रत्नुं — पृ. १९२

३६। ‘स.ग. श्री ब्रह्मान्द जीवन दर्शन’ — ल.स. नवीनदान रत्नुं — पृ. ६२-७२

३७। ‘स.ग. श्री ब्रह्मान्द जीवन दर्शन’ — ल.स. नवीनदान रत्नुं — पृ. ६२-७२

३८। ‘स.ग. श्री ब्रह्मान्द जीवन दर्शन’ — ल.स. नवीनदान रत्नुं — पृ. १३८

३९। ‘ब्रह्मान्द काव्य भाग—१’ — सं.शा. नारायणसेवादासजी — पृ. १६

४०। ‘ब्रह्मान्द स्वामी जीवन चरित्र — सं.शा. नारायणसेवादासजी — पृ. ११-१२

४१। ‘स.ग. श्री ब्रह्मान्द जीवन दर्शन’ — ल.स. नवीनदान रत्नुं — पृ. १२

४२। ‘स.ग. श्री ब्रह्मान्द जीवन दर्शन’ — ल.स. नवीनदान रत्नुं — पृ. १३

४३। ‘स.ग. श्री ब्रह्मान्द जीवन दर्शन’ — ल.स. नवीनदान रत्नुं — पृ. ७०

४४। ‘ब्रह्मान्द काव्य भाग—१’ — सं.शा.नारायण सेवादासजी — पृ. २१

४४+१ ‘ब्रह्मान्द काव्य भाग—१’ पद—९— पृ.४

४५। ‘ब्रह्मान्द काव्य भाग—१’ सं.शा.नारायण सेवादासजी — पृ. ३९

४६। ‘ब्रह्मान्द काव्य भाग—१’ सं.शा.नारायण सेवादासजी — पृ. ३८

४७। ‘ब्रह्मान्द काव्य भाग—१’ सं.शा.नारायण सेवादासजी — पृ. ४५
37+2 ‘ब्रह्मानंद काव्य भाग-१’ सं.शा.नारायण सेवादासजी – पृ.४७
37+3 ‘ब्रह्मानंद काव्य भाग-१’ सं.शा.नारायण सेवादासजी – पृ.५०

38. ‘स.पु.ब्रह्मानंद स्वामी जीवन दर्शन’ – ले.सं.नविनदान रत्नु पृ.१२६
39. ‘स.पु.ब्रह्मानंद स्वामी जीवन दर्शन’ – ले.सं.नविनदान रत्नु पृ.१७५-१७६
40. ‘स.पु.ब्रह्मानंद स्वामी जीवन दर्शन’ – ले.सं.नविनदान रत्नु पृ.१७६-१७७
41. ‘स.पु.ब्रह्मानंद स्वामी जीवन दर्शन’ – ले.सं.नविनदान रत्नु पृ.१२९-१३०
42. ढाढी – लोगों के समक्ष नाचाराण करके उन्हें खुशकर अपना निवाह करनेवाली जाति के लोग। अपने आपको ढाढी के नामसे जाने जाते हैं।
43. रत्नोधा – रात को न दिखाई देने वाला।
44. ‘स.पु. ब्रह्मानंद स्वामी जीवन दर्शन’ – ले.सं.नविनदान रत्नु पृ.३१५
45. ‘ब्रह्मानंद काव्य भाग-१’ पद-१३- पृ.१६
46. ‘ब्रह्मानंद काव्य भाग-२’ पद-२५६- पृ.८०५
47. ‘स.पु. ब्रह्मानंद स्वामी जीवन दर्शन’ – ले.सं.नविनदान रत्नु पृ.३४९
48. ‘स.पु. ब्रह्मानंद स्वामी जीवन दर्शन’ – ले.सं.नविनदान रत्नु पृ.३५६
49. ‘ब्रह्मानंद काव्य भाग-२’ पद-२५५२- पृ.८०१
50. ‘स.पु. ब्रह्मानंद स्वामी जीवन दर्शन’ – ले.सं.नविनदान रत्नु पृ.३५३
51. ‘स.पु. ब्रह्मानंद स्वामी जीवन दर्शन’ – ले.सं.नविनदान रत्नु पृ.३५४
52. मूली मंदिर के पास भोगावली नदी (भोगाव) के तट पर जहां ब्रह्मानंद स्वामी के पार्श्व देख का अंतिम संस्कार किया गया था। वहाँ पर यह स्मारक स्थित है।
53. स.पु. ब्रह्मानंद स्वामी जीवन दर्शन – ले.सं.नविनदान रत्नु – पृ.३५६
54. स्व.सं. के प्र.कवियों के काव्यों में कृष्णभक्ति : एक अध्ययन – डॉ. हेमल व्यास – पृ.१६०
55. ‘ब्रह्मानंद पदावली’ डॉ. ईश्वरलाल दवे – पृ. १३
56. ‘ब्रह्मानंद पदावली’ डॉ. ईश्वरलाल दवे – पृ. १३-१४

२१६
५७. सर्वाधीनारायण प्रकाश’ - पत्रिका - जनवरी - २०१२ में लेख - व्यक्तिव अनेक
सर्जन महाकावि - ब्रह्मानंद न्रु. - पृ. २८

५८. नारायण गीता, वर्तमान विवेक तथा धर्म सिद्धांत अप्रकाशित ग्रंथ इन्हें छोड़कर अन्य
ग्रंथों का प्रकाश चवा.गु. सुरेन्द्रनगर ने सं. २०५४ वर्ष पंचमी १ फरवरी १९९८ के
दिन किया गया है।

५९. ‘सर्वाधीनारायण संत साहित्य’ लेख-‘ब्रह्मानंद स्वामी हिन्दी कविता’ उज्जवलभाई पटेल